लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

वार्षिक पत्रिका

दशम् अंक, वर्ष 2020

सत्यमेव जयते

प्रयास

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा)
कौलागढ़, देहरादून–248195
उत्तराखण्ड

दलाई हिल, मसूरी

प्रयास

दशम् अंक, वार्षिक पत्रिका वर्ष 2020

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा) उत्तराखण्ड

'महालेखाकार भवन'

कौलागढ़, देहरादून–248195
उत्तराखण्ड

सत्यमेव जयते

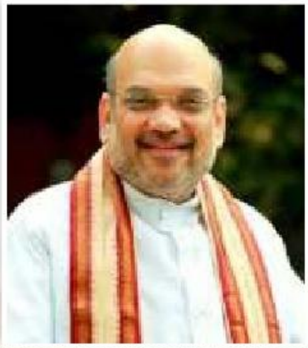

अमित शाह
गृह मंत्री
भारत

AMIT SHAH
HOME MINISTER
INDIA

प्रिय देशवासियों!

हिंदी दिवस के शुभ अवसर पर, मैं सभी देशवासियों को हार्दिक शुभकामनाएं देना चाहता हूँ।

पूरी दुनिया में हमारा देश, एक अलग प्रकार का देश है। कई प्रकार की संस्कृतियां, कई प्रकार की कलाएं और कई प्रकार की भाषाओं का मेलजोल यहां पर दिखाई पड़ता है। यह हमारी बहुत बड़ी ताकत है। हम सभी दृष्टि से एक संपन्न राष्ट्र हैं। अनेक भाषाएं एवं संस्कृतियां हमारी न केवल विरासत हैं, हमारी ताकत भी हैं, इसलिए हमें इसको आगे बढ़ाना है। सांस्कृतिक व भाषाई विविधता से भरे, इस गौरवशाली देश में पूरब से पश्चिम और उत्तर से दक्षिण के बीच, सदियों से, कई भाषाओं ने संपर्क बनाए रखने का काम किया है। हिंदी इसमें प्रमुख भाषा रही है और ये योगदान जो हिंदी का है इसको देश के कई नेताओं ने समय–समय पर सराहा है और हिंदी ने भारत को एकता के सूत्र में पिरोने का काम किया है। हिंदी भाषा और बाकी सारी भारतीय भाषाओं ने मिलकर भारत की सांस्कृतिक विविधता को आगे ले जाने में बहुत बड़ा योगदान दिया है। हिंदी के साथ बृज, बुंदेलखंडी, अवधी, भोजपुरी, अन्य भाषाएं और बोलियां इसका उदाहरण हैं। हिंदी हमारे देश के स्वतंत्रता संग्राम के समय से राष्ट्रीय एकता और अस्मिता का प्रभावी व शक्तिशाली माध्यम रही है। हिंदी की सबसे बड़ी शक्ति इसकी वैज्ञानिकता, मौलिकता, सरलता, सुबोधता और स्वीकार्यता भी है। हिंदी भाषा की विशेषता है कि इसमें जो बोला जाता है, वही लिखा जाता है। हिंदी की इन विशेषताओं एवं सर्वग्राह्यता को ध्यान में रखते हुए भारतीय संविधान सभा ने 14 सितंबर, 1949 को हिंदी को संघ की राजभाषा के रूप में अंगीकार किया।

भारतीय सभ्यता, संस्कृति और संस्कारों की अविरल धारा, मुख्य रूप से हिंदी भाषा से ही जीवन्त तथा सुरक्षित रह पाई है। हिंदी भाषा ने, बाकी स्थानीय भाषाओं को भी, बल देने का प्रयास किया है। हर राज्य की भाषा को, हिंदी ताकत देती है। हिंदी की प्रतिस्पर्धा कभी भी स्थानीय भाषा से नहीं रही, यह पूरे भारत के जनमानस में ज्यादा स्पष्ट होने की जरूरत है। 26 जनवरी 1950 को लागू भारतीय संविधान के अनुच्छेद 343 में यह प्रावधान रखा गया कि संघ की राजभाषा 'हिंदी' व लिपि 'देवनागरी' होगी। अनुच्छेद 351 के अनुसार भारत की अन्य भाषाओं का प्रयुक्त रूप, शैली और पदों को आत्मसात करते हुए, जहां आवश्यक है या वांछनीय हो, वहां उसके शब्द–भंडार के लिए मुख्यतः संस्कृत से, और गौणतः अन्य भाषाओं से शब्द ग्रहण करते हुए, हिंदी की समृद्धि सुनिश्चित की जानी है।

संवैधानिक दायित्वों का निर्वहन करने के लिए आवश्यक है कि सरकारी कामकाज अनुवाद की अपेक्षा मूल रूप से हिंदी में किया जाए और अन्य स्थानीय भाषाओं में इसका अनुवाद किया जाए। भारत सरकार के सभी मंत्रालयों/विभागों/कार्यालयों/उपक्रमों तथा बैंकों इत्यादि के कार्यालय प्रमुखों एवं वरिष्ठ अधिकारियों से मेरा विनम्र आग्रह है कि स्थानीय भाषाओं के साथ–साथ वे सरकारी कामकाज में, मूल रूप से हिंदी का प्रयोग करें ताकि कार्यालय के अन्य अधिकारियों व कर्मचारियों को भी अपना कार्य हिंदी में करने की प्रेरणा मिले।

माननीय प्रधानमंत्री जी के नेतृत्व में आज भारत एक संसाधन–संपन्न शक्तिशाली देश के रूप में उभर रहा है और इसमें देश की समृद्ध भाषा हिंदी का बहुत बड़ा योगदान है। वैश्विक मंचों पर प्रधानमंत्री जी द्वारा हिंदी में दिए गए भाषणों से, हिंदी का वैश्विक कद मजबूत हुआ है और हिंदी प्रेमियों को प्रेरणा भी मिल रही है। इससे देश की युवा पीढ़ी भाषा के साथ जुड़ने की ओर अग्रसर हुई है। बस, आवश्यकता इस बात की है कि आगामी पीढ़ी को अधिक से अधिक सूचनाएं हिंदी में उपलब्ध कराई जाएं और उनमें ऐसे संस्कार विकसित किए जाएं कि वह मूल रूप से हिंदी भाषा में काम करें।

वर्तमान समय में कोई भी भाषा सूचना प्रौद्योगिकी के बिना पल्लवित और पोषित नहीं हो सकती। राजभाषा विभाग सूचना प्रौद्योगिकी के माध्यम से राजभाषा हिंदी का और अधिक प्रचार करने के लिए प्रतिबद्ध हैं और इस दिशा में निरंतर

कार्य कर रहा है। प्रधानमंत्री जी के 'आत्मनिर्भर भारत' के अभियान को आगे बढ़ाते हुए, राजभाषा विभाग द्वारा हिंदी के लिए ई–टूल्स सुदृढ़ करने का काम किया जा रहा है। 'वोकल फॉर लोकल' के अंतर्गत किए जा रहे कार्यों में विभाग द्वारा निर्मित स्मृति आधारित अनुवाद टूल 'कंठस्थ' का विस्तार किया जा रहा है जिससे अनुवाद के क्षेत्र में समय की बचत करने के साथ–साथ एकरूपता और उत्कृष्टता भी सुनिश्चित की जा सके। इसके अतिरिक्त लीला हिंदी प्रवाह, ई–महाशब्दकोष मोबाइल एप्लीकेशन भी हिंदी प्रेमियों के लिए अत्यंत उपयोगी है। राजभाषा विभाग द्वारा ई–सरल हिंदी वाक्यकोष का विकास किया जा रहा है।

राजभाषा हिंदी का प्रयोग बढ़ाने और कार्यलय स्तर पर हिंदी में लेखन को प्रोत्साहित एवं प्रेरित करने में, हिंदी गृह–पत्रिकाओं का विशेष महत्व है। राजभाषा विभाग द्वारा बनाए गए ई–पत्रिका पुस्तकालय के माध्यम से हिंदी के पाठक विभिन्न सरकारी संस्थानों द्वारा प्रकाशित होने वाली ई–पत्रिकाओं से लाभान्वित हो पाएंगे। आज हिंदी दिवस के मौके पर मेरा यह कहना है कि सभी मंत्रालय सरकारी कामकाज में इन ई–टूल्स का अधिक से अधिक प्रयोग सुनिश्चित करें।

विगत कई माह से पूरी दुनिया अत्यंत विषम परिस्थिति से गुज़र रही है। प्रधानमंत्री जी के नेतृत्व में भारत कोरोना महामारी से लड़ने में सफल रहा और इस लड़ाई में सभी राज्य सरकारों के साथ प्रत्यक्ष नागरिकों ने भी सहयोग किया है। समय–समय पर प्रधानमंत्री जी ने राष्ट्र को संबोधित कर देश की जनता को कोरोना महामारी से लड़ने के लिए संबल प्रदान किया। कोरोना महामारी से उत्पन्न अप्रत्याशित संकट की स्थिति के कारण, जनहित को प्राथमिकता देते हुए इस वर्ष 'हिंदी दिवस समारोह' का आयोजन नहीं किया जा रहा है लेकिन जिन मंत्रालयों, विभागों, संस्थाओं, बैंकों, सरकारी उपक्रमों, नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियों ने पूरे वर्ष पूरी निष्ठा से हिंदी में श्रेष्ठ कार्य किया है और प्रतिष्ठित राजभाषा कीर्ति पुरस्कार जीते हैं, उन्हें मैं अपनी ओर से बहुत–बहुत बधाई देता हूँ। इसके साथ–साथ हिंदी में मौलिक पुस्तक लेखन और पत्र–पत्रिकाओं में प्रकाशित उत्कृष्ट लेखों के लिए प्रदान किए जाने वाले राजभाषा गौरव पुरस्कार विजेता भी बधाई के पात्र हैं ही। मैं आशा करता हूँ कि आप सभी पुरस्कार विजेता यहीं से थकेंगे नहीं, भविष्य में, हिंदी के लिए कार्य करने के लिए, उच्च और अनुकरणीय मानदंड प्रस्थापित करते रहेंगे। ये प्रधानमंत्री जी की प्रेरणा भी कि देश इस आपदा को अवसर में परिवर्तित करें। राजभाषा विभाग ने भी इस अवसर का सकारात्मक उपयोग करते हुए सूचना तकनीक का सहारा लिया और पहली बार वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग जैसे ऑनलाइन माध्यमों के जरिए, बड़ी संख्या में, ई–निरीक्षण एवं नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठकों का आयोजन किया। राजभाषा विभाग के प्रशिक्षण केंद्र, केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान तथा केंद्रीय अनुवाद ब्यूरो द्वारा पहली बार ऑनलाइन वेब कांफ्रेंसिंग टूल के माध्यम से प्रशिक्षण दिया जा रहा है।

संघ की राजभाषा नीति के अनुसार हमारा संवैधानिक दायित्व है कि हम राजभाषा संबंधित अनुदेशों का अनुपालन करें, तत्परता के साथ अनुपालन करें। हम स्वयं मूल कार्य हिंदी में करते हुए अधिकारियों/कर्मचारियों से राजभाषा अधिनियमों का अनुपालन सुनिश्चित कराएं ताकि आमजन सभी सरकारी योजनाओं व कार्यक्रमों का लाभ, निर्बाध रूप से उठा पाए।

आइए! हिंदी दिवस के इस अवसर पर हम प्रतिज्ञा लें कि हिंदी की उन्नति व प्रगति की यात्रा पूरे समर्पण के साथ हम आगे बढ़ाते हुए, हम सब मिलकर राजभाषा हिंदी को सभी स्थानीय भाषाओं के साथ में रखते हुए, हिंदी के माध्यम से आत्मनिर्भर भारत का निर्माण करेंगे। इस मौके पर, मैं देश के युवाओं को भी कहना चाहता हूँ कि जब स्थानीय भाषा में बोलने वाला साथी हो तब और कोई भाषा का प्रयोग न करते हुए भारतीय भाषाओं के प्रयोग का आग्रह रखिए। मैं अभिभावकों को भी कहना चाहता हूँ, – अपने बच्चों के साथ भारतीय भाषाओं में बात करने की बात का संस्कार डालें और अपनी भाषाओं की यात्रा को हम आगे बढ़ाएं। मोदी सरकार की नई शिक्षा नीति से अन्य भारतीय भाषाओं व हिंदी का समानांतर विकास होगा, ऐसा मुझे पूरा विश्वास है कि हमारे सामूहिक प्रयासों से हिंदी न केवल राष्ट्रीय स्तर पर अपितु, विश्वपटल पर ज्ञान–विज्ञान से परिपूर्ण समृद्ध भाषा के रूप में स्थापित होगी।

'हिंदी दिवस' के शुभ अवसर पर आप सभी को पुनः मैं हार्दिक शुभकामनाएं देता हूँ

भारत माता की जय!

नई दिल्ली,
14 सितंबर, 2020

(अमित शाह)

चौपटा – तुंगनाथ – चंद्रशिला

सत्यमेव जयते

प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा)
उत्तराखण्ड, देहरादून

संदेश

कार्यालयीन गृह पत्रिका 'प्रयास' के दशम् अंक के प्रकाशन पर मुझे अत्यंत हर्ष है। अपनी प्रतिभा एवं राजभाषा हिंदी के प्रति प्रेम को कार्यालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने कहानी, कविता, लेख आदि के माध्यम से प्रेमपूर्वक दर्शाया है।

मैं पत्रिका के सफल सम्पादन हेतु संपादक मण्डल एवं रचनाकारों को बधाई देता हूँ तथा पत्रिका के उत्तरोत्तर अंकों के प्रचार–प्रसार एवं सफल प्रकाशन के लिए शुभकामनाएँ देता हूँ।

एस. आलोक

नैनादेवी मंदिर, नैनीताल

सत्यमेव जयते

प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा)
उत्तराखण्ड, देहरादून

संदेश

''प्रयास'' पत्रिका के दशम् अंक के प्रकाशन पर मुझे प्रसन्नता है। राजभाषा हिंदी में रचित लेख, कहानियाँ, कविताएं आदि अधिकारियों एवं कर्मचारियों द्वारा हिंदी भाषा के निरंतर उन्नयन के लिए किए जा रहे प्रयासों को सार्थक एवं मूर्त रूप प्रदान करती है।

पत्रिका के उत्तरोत्तर प्रगति एवं प्रसार की कामना सहित संपादक मण्डल को शुभकामनाएँ।

योगेश अग्रवाल
उपमहालेखाकार (प्रशासन)
एवं प्रधान संपादक 'प्रयास'

रामकृष्ण आश्रम, देहरादून

संपादकीय...

निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल।
बिन निज भाषा-ज्ञान के, मिटत न हिय को सूल।

श्री भारतेन्दु हरिश्चंद्र जी ने अपनी इन पंक्तियों में हिंदी के महत्व को दर्शाया है। 14 सितंबर 1949 को हिन्दी को भारत की राजभाषा घोषित किया गया था तबसे प्रत्येक वर्ष 14 सितंबर को भारत में हिंदी दिवस के रूप में मनाया जाता है। हिंदी विश्व की लगभग 3,000 भाषाओं में से एक है। इतना ही नहीं हिंदी आज दुनिया की सबसे बड़ी आबादी द्वारा बोली और समझे जानी वाली भाषा है।

हमारे देश में हिंदी को राजभाषा का दर्जा मिला है परन्तु आधिकारिक कार्यों में अहमियत कम मिली है। आधिकारिक काम – काजों में अंग्रेजी को ही महत्व दिया जाता है। आज के समय हिंदी भाषा नाम मात्र के लिए ही श्रेष्ठ है। लोग इसके महत्व को भूलते जा रहे

हैं। हिंदी के महत्व को समझने एवम् इसके अधिक से अधिक प्रयोग को बढ़ावा देने हेतु प्रत्येक वर्ष सितंबर माह में समस्त सरकारी कार्यालयों में हिंदी पखवाड़े का आयोजन किया जाता है। हिंदी भाषा के प्रचार एवम् अधिक प्रयोग को बढ़ावा देने के क्रम में कार्यालय द्वारा प्रयास पत्रिका के दशम् अंक को आप सब को भेंट करते हुए मुझे अत्यंत हर्ष की अनुभूति हो रही है। आशा है कि पिछले अंकों की भांति यह अंक भी आपको पसंद आएगा।

जय हिंद। जय भारत।

स्वाती ठाकुर
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी/हिंदी

पात्रिका **परिवार**

संरक्षक

श्री एस आलोक, प्रधान महालेखाकार

प्रधान संपादक

श्री योगेश अग्रवाल, उप महालेखाकार

परामर्शदाता

- श्री डी पी लखेडा, वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
- श्री अश्विनी कुमार पाण्डेय, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
- श्री अशोक कुमार, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

संपादक

श्री संजय राजदान,
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

उपसंपादक

श्रीमती स्वाती ठाकुर,
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

संपादन सहयोग

- श्री अमित कुमार वर्मा
- श्रीमती रेशू चौधरी
- श्री कपिल भाटी
- श्री प्रवीण कुमार

मुख्य पृष्ठ

मां गंगा आरती, हरिद्वार

पार्श्व पृष्ठ

चेनाब झील, औली

अनुक्रमणिका

क्र.सं	रचना	लेखक	पृष्ठ संख्या
1.	डिजिटल दुनिया	श्री संजय राजदान	01
2.	चाय कथा	श्री संतोष कुमार गुप्ता	03
3.	पंचदिवसीय विवाह	श्री संतोष कुमार गुप्ता	06
4.	कृत्रिम बुद्धिमता (आर्टिफिशियल इन्टेलिजेन्स) और मनुष्य	श्री अशोक कुमार	09
5.	आत्माओं का स्टॉक	श्री अशोक कुमार	13
6.	अवसाद–एक अदृश्य शत्रु	कु० अर्चिता ध्यानी	16
7.	मूल्य आधारित शिक्षा	श्रीमती रेखा	18
8.	हठ योग	श्रीमती रेखा	21
9.	मानव संस्कारों का बदलता स्वरुप	श्री गजेंद्र भट्ट	23
10.	स्वतन्त्रता दिवस	श्री अंकित जैन	26
11.	प्रलयकाल	श्री अंकित जैन	28
12.	निर्भया	श्री अश्विनी कुमार पाण्डेय	30
14.	मातृ दिवस	श्री अश्वनी कुमार पाण्डेय	32

15.	कोरोना – एक महामारी	श्री योगेश त्यागी	34
16.	अपराध	श्रीमती रेणुका पँवार	36
17.	मन की बातें	श्रीमती हिना सलीम	38
18.	मेरी उन शामों में एक शाम सुहानी सी	श्री मनोज	40
19.	सेना हिन्दुस्तान की	श्री अगम सिंह	42
20.	जीवन – प्रश्न	श्री कमलकान्त पाण्डेय	45
21.	भाव	श्री कमलकान्त पाण्डेय	47
22.	बाल मजदूर	श्री विजय कुमार	49
23.	शहीद पुत्र का पिता	श्री विजय कुमार	51
24.	पिटाई पोरोठा	श्री कमलकान्त पाण्डेय	53
25.	चिकित्सा क्षेत्र में भारत का बदलता स्वरुप	श्री गजेंद्र भट्ट	55
26.	स्त्री	श्रीमती हिना सलीम	57
27.	गंदगी मुक्त भारत	कु० शगुन बिष्ट	59

ताड़केश्वर धाम

डिजिटल दुनिया

श्री संजय राजदान
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

सम्पूर्ण विश्व मे किसी भी राष्ट्र के विकास की गति की परिकल्पना बिना प्रौद्योगिकी के नहीं की जा सकती है। डिजिटल प्रौद्योगिकी ने हमारे देश के विकास मे महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

प्रौद्योगिकी का विकास प्रगति की आधारशिला है और शताब्दियों में इसने समाज के कामकाज के तौर–तरीकों को बदला है। प्रौद्योगिकीय आविष्कारों ने मानव श्रम को कम करके, दक्षता लाकर और उत्पादकता बढ़ाकर समाज के प्रत्येक क्षेत्र में क्रांति ला दी है। चाहे शिक्षा में सूचना संचार प्रौद्योगिकी हो, मीडिया और सेवा क्षेत्र में डिजिटलीकरण, स्वास्थ्य सेवा के लिए स्वचालित उपकरण क्यों न होय समाज के प्रत्येक क्षेत्र को प्रौद्योगिकी का लाभ मिल रहा है। भारत में डिजिटल क्रांति महत्वपूर्ण है क्योंकि इसने समाज के लगभग सभी क्षेत्रों में बड़े पैमाने पर कायापलट की है। शासन प्रणाली से लेकर बेहतर स्वास्थ्य सेवा और शिक्षा सेवाओं में डिजिटलीकरण, कैशलैस अर्थव्यवस्था और डिजीटल लेन–देन, अधिकारी तंत्र में पारदर्शिता, कल्याणकारी योजनाओं का निष्पक्ष और तेजी से क्रियान्वयन इत्यादि। भारत में डिजिटल क्रांति ने न केवल समाज के कामकाज के तौर तरीकों को बदला है बल्कि देश के साधन सम्पन्न लोगों और वंचितों के बीच की खाई को पाटने का भी काम किया है।

डिजिटल प्रौद्योगिकी ने कार्यालयी व्यवस्था को दक्ष एवं समयबद्ध बनाने मे अभूतपूर्व योगदान दिया है। वर्तमान समय मे क्या किसी कार्यालय की कल्पना बिना कम्प्यूटर और इंटरनेट के की जा सकती है? नहीं। क्योंकि कार्यालयी सूचनाओं का सतत प्रवाह किसी भी विभाग के सुचारु रूप से कार्य करने के लिए अत्यंत आवश्यक है। प्रायः सभी कार्यालय आदेश डिजिटल रूप मे प्रसारित किए जा रहे हैं। इसको सूचना तकनीक अधिनियम–2000 वैधानिकता प्रदान करता है। डिजिटल प्रौद्योगिकी के कारण कागजों पर निर्भरता कम होने के साथ ही प्रभावी तरीके से कार्यालयी सूचनाओं का प्रसारण एवं संग्रहण करना सम्भव हो सका है।

किसी भी समाज में शिक्षा की गुणवत्ता समाज की वास्तविक रचना की आधारशिला है। शिक्षा के महत्व को ध्यान में रखते हुए, डिजिटल इंडिया की पहल ने समाज में शिक्षा के प्रसार में सुधार के लिए अनेक डिजिटल सेवाओं को एक साथ ला दिया है। चाहे प्राइमरी स्तर हो, सैकंडरी स्तर अथवा उच्च शिक्षा और अनुसंधान की सुविधा हो, इस क्षेत्र में विभिन्न डिजिटल योजनाएं देश की शिक्षा प्रणाली में क्रांति ला रही हैं।

सशक्त, सम्पन्न एवं समतामूलक भारत का लक्ष्य डिजिटल प्रौद्यिगिकी के महत्तम उपयोग से साकार होता दिख रहा है।

राष्ट्रीय व्यवहार में हिंदी को काम में लाना देश की एकता और उन्नति के लिए आवश्यक है।

– महात्मा गांधी

चाय कथा

श्री संतोष गुप्ता
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

मुंबइया गाना "एक गरम चाय की प्याली हो, कोई उसको पिलाने वाली हो" से लेकर बारिश के मौसम मे चाय–पकौड़े की हर घर मे जुगलबंदी चाय की जन–स्वीकार्यता के बारे मे बहुत कुछ कहती है। चाय की प्याली से दिन की शुरुआत, और दिन भर चाय का साथ। आवश्यक है कि इतने महत्वपूर्ण पेय चाय से जुड़े रोचक इतिहास को जानें।

चाय आखिर हमारी जिंदगी में आई कैसे? यह जानना काफी दिलचस्प है। चाय की खोज का श्रेय बोधिधर्म नामक एक बौद्ध भिक्षु को जाता है। ये बोधिधर्म वही हैं, जिन्होंने शाओलिन कुंगफू नामक मार्शल आर्ट का आविष्कार किया था और मजेदार बात, बोधिधर्म मूलतः भारत के थे। उनका जन्म दक्षिण भारत के पल्लव शासकों के किसी राजपरिवार में हुआ था। वे बाद में हिंदू से बौद्ध बन गए। उनके गुरु ने धर्म प्रचार के लिए उन्हें चीन जाने के निर्देश दिए तो वे 475 ईस्वी में चीन पहुंच गए। चीन में बोधिधर्म मेडिटेशन सिखाने लगे। उनका यही मेडिटेशन चाय की खोज की वजह बना। चीन में इसको लेकर एक किंवदंती भी प्रसिद्ध है। इस किंवदंती के अनुसार एक बार बोधिधर्म ने 9 साल तक बगैर पलकें झपकाए ध्यान करने का संकल्प लिया। वे सालों इसमें सफल रहे। लेकिन उनका यह संकल्प पूरा होने के कुछ दिन पहले ही उन्हें नींद लग गई। उनका संकल्प टूट गया। नींद खुलते ही उन्होंने गुस्से में अपनी पलकें उखाड़कर जंगल में फेंक दी। कुछ दिनों बाद वे वापस उसी जगह आए तो उन्हें वहां कुछ झाड़ियां नजर आईं। उन्होंने उसके कुछ पत्तों को तोड़कर चखा तो उनमें अचानक एक नई ऊर्जा का संचार हो गया। यही पत्ते चाय थी। अब जरा किंवदंती को अगर अलग रख दें। तो कुछ ऐसा हुआ होगा कि ध्यान के

संकल्प के समय बोधिधर्म को नींद आने लगी होगी। इससे बचने के लिए उन्होंने आस–पास उगी झाड़ियों के पत्तों को चखा होगा। इससे उनकी नींद भाग गई होगी। बस, यही से चाय की खोज हुई होगी।

चाय की खोज की एक और कहानी भी प्रचलित है। एक बार चीनी शासक शेन नुंग गर्मी के मौसम मे तपती धूप से परेशान होकर एक पेड़ के नीचे आराम करने लगे। मौसम में सुस्ती छाई हुई थी। तभी उन्होंने एक सेवक से अपने लिए पानी गर्म करके लाने को कहा। लेकिन पानी गर्म करते समय हवा में कहीं से कुछ पत्तियां उड़कर उबलते हुए पानी में गिर गईं। उनका सेवक थोड़ा आलसी किस्म का था। तो उसने उन पत्तियों को ही छानकर वह पानी शेन नुंग को पिला दिया। नुंग को वह पानी पीते ही ताजगी महसूस हुई तो उन्होंने सेवक को बुलाया। सेवक ने डरते–डरते सच बता दिया। पर नुंग बड़े खुश हुए और उन्होंने ऐसे पत्तों को ढूंढने का हुक्म सुना दिया। इस तरह शेन नुंग ऐसे पहले शख्स बने जिन्होंने आफ्टरनून टी का स्वाद चखा। देखिये कभी कभी कुछ अच्छे काम आलसी लोगों के द्वारा भी किए गए, चाय का उदाहरण सामने है।

भारत में चाय से जुड़ा एक और इतिहास है। बौद्ध की शिक्षाओं से प्रभावित होकर जैन धर्म के संस्थापक महावीर जी ने ध्यान करना शुरू किया था। यह वो दौर था, जब उन्होंने धर्म की स्थापना नहीं की थी, बल्कि वे खुद ज्ञान प्राप्ति के मार्ग पर थे।

बौद्ध भिक्षुओं से ध्यान के गुण सीखने के दौरान महावीर जी को चाय की पत्तियों के बारे में पता चला। उन्होंने भारत के असम में उन झाडियों को खोज निकाला, जहां से चाय की पत्तियां मिल सकती थीं। यह एकांत वन था, इसलिए उन्हें ध्यान करने के लिए भी पर्याप्त जगह मिल गई। इस तरह महावीर जी ने जंगल में करीब 7 साल तक ध्यान किया। कहते हैं इस दौरान वह खुद को जीवंत रखने के लिए चाय की पत्तियों को चबाया करते थे। इन पत्तियों के असर से उन्हें नींद नहीं आती थी और वे बिना भोजन के भी ध्यान करने में सक्षम रहे। कहते हैं बौद्ध भिक्षुओं द्वारा ही असम की आम जनता तक चाय के गुणों की बात पहुंची और उन्होनें भी इसे रोजमर्रा के जीवन में शामिल कर लिया। वैसे चाय का उपयोग औषधि के तौर पर भी किया जाता रहा। कहते हैं कि इसकी पत्तियों से घाव भर जाते थे (एंटीओक्सीडेंट गुण के करण) और इसका काढ़ा बनाकर पीने से स्फूर्ति आती थी।

चीनी बौद्ध भिक्षु लू यू (733–804) ने तांग शासनकाल के दौरान पहली बार चाय का दस्तावेजीकरण किया। इस तरह चीन से होते हुए चाय भारत पहुंची! चाय बेशक भारत आ चुकी थी, लेकिन इसका प्रचार–प्रसार यहां आकर रूक गया. जबकि, जापान से होते हुए चाय की महक इंग्लैंड तक जा पहुंची। इंग्लैंड चाय के लिए जापान पर निर्भर हो गया और जापान चीन से चाय की पत्तियों की तस्करी करके आपूर्ति करने लगा। इस पूरे क्रम में इंग्लैंड को चाय के लिए बड़ी कीमत चुकानी पड़ रही थी। भारत में ईस्ट इंडिया कंपनी की शुरुआत होने के साथ ही

अंग्रेजों ने यहां के आम लोगों के खानपान पर अध्ययन भी शुरू कर दिया। इसी बीच उन्हें पता चला कि असम के लोग एक काले रंग का पेय पीते हैं, जो उन्हें ताजगी देता है। जब अंग्रेज अधिकारियों ने उस पेय की जांच की, तो पाया कि यह जंगली चाय की पत्तियां हैं। अंग्रेजों के लिए असम की चाय किसी खजाने से कम नहीं थी।

भारत में चाय होने की सबसे पहली खबर 1834 में गवर्नर लॉर्ड विलियम बैंटिक को मिली थी। उन्होंने इस काले पेय के बारे में ब्रिटिश सरकार के अधिकारियों को बताया और फिर एक टीम लेकर असम पहुंचे। जहां आम नागरिकों की मदद से चाय के पौधे की तलाश कर ही ली। एक साल मेहनत करने के बाद उन्होंने 1835 में असम के अंदर चाय का पहला बाग लगाया। जब चीन तक यह बात पहुंची कि भारत में चाय का उत्पादन हो रहा है, तो उन्होंने अंग्रेजों से व्यापारिक समझौता किया। इस समझौते के तहत उन्होंने चीनी चाय के कुछ बीज भी भारत भिजवाए। अंग्रेजों ने चाय के बीजों को प्रशिक्षण के लिए कलकत्ता के परीक्षण केन्द्र भेजा। कुछ महीनों की मेहनत के बाद देखा गया कि चीनी चाय की पत्तियों के लिए भारत की भूमि अमृत की तरह है और उसका स्वाद पहले से ज्यादा बेहतर हो गया है। इस तरह अंग्रेजों ने चाय के बागानों को विस्तार दिया। असम से होते हुए दार्जलिंग और फिर दक्षिण भारत में चाय की पैदावार शुरू हुई। असल मायनों में अंग्रेजों ने भारतीय चाय को अंतर्राष्टीय बाजार तक पहुंचाया। धीरे–धीरे पूरी दुनिया में भारत की चाय की तारीफ होने लगी। यह अंग्रेजों के लिए व्यापार का सबसे अच्छा सौदा साबित हुई।

1930 में विलियम हॉरमनसोन ने पहली बार कागज वाले टी बैग बनाए, जिनकी लागत काफी कम थी और ये हल्के भी थे। उन्होंने टी बैग को पेटेंट करवा कर सलाडा चाय कंपनी को बेच दिया। 1944 तक टी बैग चलन में आ गए थे, इससे चाय की कीमत भी काफी कम हो गई।

चाय की दुनिया मे तंदूरी चाय एक नया प्रयोग है। इसमे गरम कुल्हड़ों के कारण मिट्टी का सोंधापन चाय के स्वाद को बहुत ही बढ़ा देता है, तथा इंद्रियों को भी तृप्त करता है। हिबिस्कस चाय, लेमन चाय इत्यादि भी काफी लोकप्रिय हो चले हैं। आज पूरी दुनिया भारतीय चाय की दीवानी है। अकेले भारत में ही चाय की 50 से ज्यादा किस्में और दर्जनों रेसिपी हैं। खास बात यह है कि भारतीय चाय से बने पाउडर का इस्तेमाल दवाओं में भी होने लगा है। चाय से हर्बल कैप्सूल तैयार किए जा रहे हैं, जो शरीर के इम्यून सिस्टम को ठीक करने में मददगार हैं।

देहरादून अपने लीची, बासमती चावल के साथ ही चाय–बागान के लिए भी मशहूर रहा है। परन्तु विचारणीय है कि तेजी से बढ़ते शहरीकरण ने कृषि, बाग, बागानों की भूमि पर कंक्रीट के जंगल खड़े कर दिये। भावी पीढ़ियों के लिए भूमि संरक्षण अत्यंत महत्वपूर्ण एवं समीचीन है।

तो अगली बार जब आप चाय की चुस्कीयाँ ले रहें हो, तो इससे जुड़े इतिहास को भी याद करें, चाय का स्वाद बढ़ जाएगा।

पंचदिवसीय विवाह

श्री संतोष गुप्ता
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

आधुनिक युग की भागदौड़ मे समय के सापेक्ष हर चीज सिकुड़ती चली जा रही है। परिवार के लिए, सामाजिक रिश्तों के लिए समय की कमी के कारण स्नेह की डोर ढीली पड़ती जा रही है। शादी–विवाह की प्रक्रिया भी आधुनिक जीवन की आपा–धापी की भेंट चढ़ चुकी है। पहले शादी की तैयारी साल भर पहले ही शुरू कर दी जाती थी, अब केवल कुछ घंटों की औपचारिकता। पहले आवागमन के साधन कम होने के कारण विवाह के रिश्ते नजदीक ही किये जाने को प्राथमिकता दी जाती थी, अब विदेशों मे शादियाँ होना आम बात है। नजदीकमे विवाह किए जाने का एक पहलू यह रहता था कि सुख–दुख मे हमेशा सहभागिता बनी रहे।

1983–84 की बात है। उस समय सरस्वती शिशु मंदिर मे कक्षा तृतीय का छात्र था। शाम के समय घर के बाहर ही बरामदे मे बैठ कर मुहल्ले के बच्चों के साथ खेल रहा था और पिता जी बैठक मे कुछ लोगों से अपनी परिचर्चा मे मशगूल थे। तभी पड़ोस के रमासरे चाचा आए और शादी का कार्ड देते हुए बोले–'भईया प्रणाम, अगले महीने छोटके की शादी है और आपको बारात में चलना है। विष्णु–मंडप की पूरी जिम्मेदारी आप ही को संभालनी है'। पिताजी ने सहमती दी और मुझे आवाज दे कर कहा चाचा जी के लिए लस्सी–पानी ले आओ (उस समय हमारे यहाँ चाय का प्रचलन कम ही था)।

धीरे–धीरे वह शुभ घड़ी आ गई, जब बारात को विदा होना था। मेरे बाल–हठ के कारण मुझे भी बाराती बनने का अवसर मिल गया। बारात नजदीक के ही गाँव जानी थी। शाम को निकले, एक घण्टे मे गंतव्य तक पहुँच गए। बारात के दरवाजे पर पहुँचते ही घरातीयों (वधू–पक्ष) द्वारा फूलों की माला पहना कर स्वागत किया गया। द्वारपूजा की रस्म के बाद सभी बाराती विश्राम करने के लिए ले जाए गए। रास्ते मे पंचलाइट लिए हुए लोग मार्गदर्शन करते रहे। गाँव मे बिजली अभी नहीं पहुंची थी। जेनरेटर से ही बिजली की व्यवस्था की गई थी जिससे आरोही–अवरोही क्रम जलते बुझते बिजली के लट्टुओं को प्रकाशमान किया जा सके, और भोंपू/चोंगे पर फिल्मी गाने बज सकें। विनाइल की प्लेट पर 2–3 गाने ही एक तरफ अंकित होते थे। रफी–किशोर–बर्मन दा का जमाना था। खैर, बारात पहुंची अपने विश्राम–स्थल, जो कि बहुत ही बड़े अहाते वाला पुराना प्राइमरी स्कूल था। अहाते मे खुले आसमान के नीचे सौ से अधिक चारपाइयाँ गद्दे–चादर–तकिये से सुसज्जित लगी हुई थी। बाराती कुल 80–85 ही रहे होंगे इसलिए कोई भी परेशानी नहीं हुई।

विवाह के पारंपरिक कार्यक्रम विधिवत सम्पन्न होने के पश्चात भोजन के लिए पंगत बैठी। बड़ और केले के पत्तों पर भोजन सामग्री परोसी गई। घराती नई बाल्टी मे दाल–सब्जी लिए लगातार 'थोड़ा–और लीजिये' का मनुहार करते रहे। फुली हुई ताजी गर्म पुड़ियाँ बांस के बने टोकरे मे घुमाई जा रही थी। मीठे मे खीर और गुलाब जामुन। गोल्ड–स्पॉट भी उपलब्ध था। खैर, भरपेट भोजन के बाद तंद्रा–निद्रा सताने लगी। प्राइमरी विद्यालय के प्रांगड़ मे बिछे चारपाई पर लेटते ही तुरंत नींद आ गई।

सुबह मुर्गे की बांग और चिड़ियों के चहकने की आवाज से नींद खुला। दातुन–मंजन की ब्यवस्था की गई थी। एक सज्जन जैसे जागने का ही इंतजार कर रहे थे। तुरंत तौलिया–साबुन, दातुन–मंजन ले कर सबको दिये जाते थे। दातुन–मंजन के बाद जिन्हें सुबह चाय की तलब थी, उनके लिए मिट्टी के चुक्कड़ों मे शुद्ध दूध की सोंधी महक वाली चाय मिली। नहान–पूजन के बाद नाश्ते के लिए सब लोगों को विद्यालय प्रांगड़ मे ही कचौड़ी–सब्जी–जलेबी मिली। इसके बाद कुछ लोगों ने गाँव भ्रमण का कार्यक्रम बनाया। मैं भी पीछे लपक लिया। अथातो घुमक्कड़ो जिज्ञासा। गाँव के कुल–मंदिर, नहर, बगीचे, खेत को देखने के बाद वापस लौट रहे थे, तो बड़ा आश्चर्य हुआ कि हर कोई नमस्कार कर रहा। मतलब

शादी की बारात केवल एक घर या ब्यक्ति विशेष के यहाँ नहीं, बल्कि पूरे गाँव की यहाँ आई हुई मानी गई थी। हम लोग सभी के पाहुना (अतिथि) थे। इस सहृदय स्नेहिल अनुभव को यूं तो पूरे 35 वर्ष हो चुके हैं, पर लगता है कि कल की बात हो। कुछ अनुभव यादगार बन जाते हैं...सदैव के लिए अन्तःसंचित।

दोपहर के वैवाहिक–कार्यक्रम के बाद सभी लोग एक मंडप की तरफ चल पड़े। वर को भगवान विष्णु–रूप मान कर सुसज्जित सिंहासन पर बैठाया गया। वर–वधू पक्ष के विद्वान लोगों की तरफ से परिचर्चा, तर्क–वितर्क, बैठेउवा(चन्द्रसम), कविता, पौराणिक आख्यानों पर टिप्पणी इत्यादि का कार्यक्रम अद्भुत था। फेसबुक, व्हाट्सएप्प के जमाने मे ज्ञान–विज्ञान, दुख–सुख मे सहभागिता का वह चिरस्मरणीय प्रसंग इसलिए लेखनीबद्ध कर रहा हूँ ताकि वर्तमान पीढ़ी यह समझ सके की बिना आधुनिक तकनीकी के भी उनके पूर्वज जीवन के हर पल को पूर्णतः जीते थे, और दुख–सुख मे सदैव साथ थे। विषयान्तर करते हुए कहूँ तो हरिद्वार मे एक जगह लिखा हुआ पढ़ा कि अंतिम संस्कार के समय रोने वाले किराये पर मिलते हैं। अहो आधुनिकता! मनुष्य क्या आधुनिकता के नाम पर इतना अलग–थलग और अकेला पड़ चुका है? वृद्धाश्रमों को साकार मूर्तिमान देखकर मन खिन्न हो उठता है कि ये किस दौड़ मे सब शामिल हैं सब, अपनी जड़ों से कट कर?

खैर, परिचर्चा मे प्रतिभाग कर रहे विद्वानों की बातें वर–वधू के भावी जीवन हेतु निश्चय ही एक थाती थी, जिसमे उनके सुखी, सफल, स्नेहमय, सामंजस्य, सहभागिता पर आधारित गृहस्थ जीवन की आधारशिला बनने वाले थी। चार दिवस किस प्रकार बीत गए, पता ही नहीं चला। पांचवें दिन, दुल्हन की विदाई का समय...पूरा गाँव हाथ जोड़े, आँखों मे आँसू लिए उपस्थित था। गाँव छोड़ कर जाती बेटी की विदाई का वर्णन करना किंचित असम्भव सा है मेरे लिए। इतना समझता हूँ कि एक लड़की से स्त्री होने, गृहस्थ जीवन के संचालन मे किए गए योगदान और त्याग का कर्ज सम्पूर्ण मानवता पर है।

धूल–उड़ाती हुई बारात अपने वापसी के लिए गंतब्यपथ पर अग्रसर होती चली गई। पीछे यादों का कारवां रह गया।

कृत्रिम बुद्धिमता (आर्टिफिशयल इन्टेलिजेन्स) और मनुष्य

श्री अशोक कुमार
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

शतरंज एक ऐसा खेल है जिसमें दिमाग का बहुत उपयोग होता है। इस खेल के आविष्कार होने से पहले से ही राजा–महाराजा अपने मंत्रिमंडल, सेना और प्रजा के साथ शतरंजी चाले चलना सीख चुके थे। आज राजनेता राजा–महाराजों का स्थान ले चुके हैं और बाकी लोग मोहरों का।

खैर ये दुनियादारी है जो चलती रही है और चलती रहेगी। अब खिलाड़ी और खेल दोनों ऊंचे से ऊंचे स्तर की ओर अग्रसर हैं। शतरंज के खेल में वर्ष 1996 मे तब एक बड़ा इतिहास बना जब आईबीएम के सुपर कंप्युटर डीप ब्लू ने तत्कालीन शतरंज विश्व चैम्पियन और शतरंज के सर्वकालिक महानतम खिलाड़ी कहे जाने वाले गैरी कास्पारोव को हरा दिया था। ये एक बहुत बड़ी बात थी कि एक कंप्यूटर मनुष्य को उस खेल में हरा गया जिस पर मनुष्य का एकाधिकार समझा जाता था।

उस समय के बाद आज कंप्यूटरों की तकनीक और क्षमता हजारों गुना बढ़ चुकी है। इस समय शतरंज का सबसे ताकतवर 'चेस इंजिन' 'स्टॉकफिश' है जिसे हराना बड़े से बड़े

ग्रांडमास्टर के लिए भी असंभव है। इसी 'स्टॉकफिश' को गूगल और डीपमाइंड नाम की कंपनियों के सहयोग से बने 'अल्फाज़ीरो' नाम के आर्टिफ़िश्यल इंटेलिजेंस (एआई) प्रोग्राम ने बुरी तरह रोंद दिया था। इन दोनों के बीच खेले गए 1000 मुकाबलों में से 'अल्फाज़ीरो' ने 155 जीते जबकि मात्र 6 मुकाबलों में ही उसे हार का सामना करना पड़ा। अन्य मुकाबले बराबरी पर छूटे।

'अल्फाज़ीरो' प्रोग्राम में शतरंज का कोई डेटाबेस मौजूद नहीं था। न तो उसे शतरंज की आरंभिक पुस्तकें (ओपनिंग बुक्स) दी गयी थी और न ही खेल के अंत (एंडगेम) की, जिससे उसे अपनी नीति बनाने और चालों की समझ नहीं थी। उसे शतरंज का मात्र सामान्य ज्ञान (बेसिक नॉलेज) दिया गया था कि किस मोहरे की चाल कैसी होती है और कैसे चली जाती है। फिर भी उसने केवल चार घंटे में स्वयं के साथ खेलकर ही इस खेल में किसी भी मनुष्य से अधिक महारत हासिल कर ली। इन दोनों के मुकाबलों में अनगिनत ऐसी चाले देखने में आई तो आजतक कोई खिलाड़ी सोच नहीं सका था। इस तरह ये शतरंज के खेल को एक नई ऊंचाइयों पर ले गए।

ये केवल खेल की बात नहीं है बल्कि 'अल्फाज़ीरो' की उपलब्धि एआई की क्षमता और कौशल को भी प्रदर्शित करती है। दिमाग का खेल कहे जाने वाले शतरंज के खेल में आज मनुष्य कम्प्युटर के आगे कहीं नहीं टिकता है। शतरंज में कृत्रिम बुद्धिमत्ता की धाक से कई मिथक टूट जाते हैं।

जो लोग सोचते हैं कि एआई और रोबोट के रचनाकार होने के नाते हम इनसे श्रेष्ठ हैं और हमेशा रहेंगे, उनका भम्र टूट जाना चाहिए। हमारे द्वारा बनाई गई एआई हमसे भी अधिक इंटेलिजेंट हो सकती है और एक दिन रोबॉट्स हमको भी प्रतिस्थापित कर सकते हैं। एआई जैसी तकनीक का आविष्कार आत्मा जैसी चीज़ के अस्तित्व पर भी प्रश्नचिन्ह खड़े करता है।

ये सब तकनीकी आविष्कार हमें एक नए विश्व की और ले जा रहे हैं। निसंदेह तकनीक और मशीनों ने अतीत में मानव की बहुत सहायता की थी और उनके कारण मानव समाज द्रुत गति से आर्थिक तरक्की करने में सफल रहा था। इन मशीनों और उपकरणों ने असंख्य रोजगार सृजित कर गरीबी और असमानता को दूर करने में योगदान दिया है और मानव जीवन को सुखद भी

बनाया है। पहले लोगों में मशीनों के प्रति ये आशंका थी कि ये रोजगार खत्म कर देंगे पर ये गलत आशंका निर्मूल सिद्ध हुई। कंप्यूटर का ही उदाहरण लीजिए। इसके बारे में कहा गया था कि ये हजारों लोगों का काम अकेले कर लेगा और अकेले ही हजारों के रोजगार छीन लेगा। पर ये आशंका निर्मूल साबित हुई। कम्प्यूटर ने रोजगार छीने नहीं बल्कि नए–नए रोजगार सृजित किए।

पर लगता है कि मशीन और तकनीक द्वारा रोजगार सृजन किए जाने का सुनहरा दौर अब समाप्ति की और है। अब जो नयी तकनीक आ रही है वो रोजगार सृजित नहीं करेगी बल्कि काम करने के लिए मनुष्यों की आवश्यकता को ही समाप्त कर देंगी। नैनो टेक्नोलॉजी, त्रिआयामी (3–व) प्रिंटर, रोबोट तकनीक, कृत्रिम बुद्धिमता (एआइ) जैसे तकनीकी आविष्कार ऐसा दौर ला रहे हैं जब सब काम मशीनों द्वारा बिना किसी मानवीय हस्तक्षेप के किया जाएगा और उनके पर्यवेक्षण तक के लिए किसी मानव की कोई आवश्यकता नहीं होगी।

3–D प्रिंटर का आविष्कार हो चुका है जोकि मनचाही वस्तु का हूबहू प्रतिरूप ;तमचसपबंद्ध बना सकता है। इसके लिए बस वस्तु के निर्माण में लगने वाला पदार्थ और उसका कम्प्युटर में डिज़ाइन चाहिए। एआइ के क्षेत्र में लगातार प्रगति हो रही है। एआइ स्वयं सीखने और तदनुसार निर्णय ले सकने में सक्षम है और इसकी क्षमता समय के साथ बढ़ती ही जा रही है। यह स्वयं सीखने में सक्षम है तथा बिना मानवीय निरीक्षण और सहायता के निर्णय लेने (डीसीजन मैकिंग) के काम को कर सकती है। भविष्य में एआइ से युक्त रोबॉट्स वो सब काम करने लगेंगे जो मनुष्य अपनी बुद्धि विवेक से करते रहे हैं। यही नहीं वे नैनो तकनीक की सहायता से स्वयं की मरम्मत का कार्य भी कर सकेंगे। अर्थात उनके निर्माण, संचालन, मरम्मत और विकास के लिए मनुष्य की कोई आवश्यकता नहीं रहेगी। वे स्वयं ही और भी उच्च क्षमतावान मशीन का आविष्कार कर सकेंगे।

आपको ये लगता है कि ये किसी विज्ञान फंतासी का कथानक है। पर ऐसा नहीं है। जो फंतासी थी, वो आज की वास्तविकता है। एआई के प्रभुत्व का युग आरंभ हो चुका है। अल्फाज़ीरो का उदाहरण आपको मिल ही चुका है पर इसके अलावा भी अनगिनत उदाहरण आप रोज़मर्रा के जीवन में और अपने आस–पास देख सकते हैं। आप इंटरनेट पर किसी सूचना

को खोजने के लिए गूगल या कोई सर्च इंजन उपयोग करते हैं, उसमें भी एआइ काम करती है। तभी तो आपको मनपसंद नतीजे मिलते हैं। आपके फेसबुक जैसे सोशल मीडिया में एआइ आपकी रुचियों के अनुसार आपको मित्र सूची से लेकर उनकी पोस्ट तक दिखाती है और अपनी गलतियों से सीखते हुए आपको सूचना प्रदान करती है। यहाँ तक कि यह आपकी विचारधारा के अनुसार ही आपको पोस्ट दिखाती है और आपकी बुद्धि के साथ खेलती है। इंटरनेट पर आप जब कोई चैट करते हैं तो आप ये पता नहीं कर सकते हैं कि ये कोई 'बोट' है या कोई मनुष्य। 'बोट' एक प्रकार के प्रोग्राम होते हैं जो आभासी रोबोट जैसे होते हैं। ये आपसे इंसानों की तरह ही चैट कर सकते हैं। गूगल ने ऐसी कार बना दी है जो बिना ड्राइवर के चल सकती है। ये तो केवल आरंभ है। एक दिन मनुष्य इनके आगे बौना साबित हो जाएगा।

आपकी मनपसंद कार जिस फैक्ट्री में बनती है, वहाँ उसके फ्रेम को बनाने, उनको पैंट करने, फ्रेम पर पुर्जे लगाने और उसे अंतिम रूप देने का काम मनुष्यों के बजाय रोबोट कर रहे हैं। वे जानवरों को भी पाल सकते हैं, आपके बच्चों के लिए आया का भी काम कर सकते हैं और यहाँ तक कि सिलिकॉन के बाहरी आवरण युक्त मानव सदृश्य रोबोट आपके जीवन साथी की भूमिका भी निभा सकते हैं। कुल मिलाकर ये हर वो कार्य कर सकते हैं जिसे आप सोच सकते हैं।

तकनीक की प्रगति के साथ उद्योगपति भी इन्सानों के स्थान पर ऐसे रोबॉट्स को नियुक्त करना पसंद कर रहे हैं जो कभी थकता न हो, कभी हड़ताल न करे, अधिक कार्यकुशल और आज्ञाकारी हो। एक मनुष्य की सीमाएं हैं पर मशीन की नहीं। जो कभी विज्ञान गल्प था, अब वास्तविकता बन गया है। वर्तमान विश्व में विगत वर्षों से भले ही द्रुत गति से आर्थिक विकास हो रहा हो पर ये रोजगार विहीन आर्थिक विकास है। रोजगार सृजन के अवसर लगातार घट रहे हैं। उद्योगों में लगातार छंटनी हो रही है। जब मनुष्य के पास कोई काम नहीं होगा तो मनुष्य क्या करेगा? ये सोचकर ही सिहरन होती है कि एक रोजगार विहीन मशीनयुग हम मनुष्यों के लिए कैसे होगा। ये हमारे भविष्य की अनिश्चितता है। भले ही लोग इसपर विश्वास न करें पर एक समय ऐसा आएगा जब मनुष्यों के स्थान पर रोबॉट्स ही इस धरती पर राज करेंगे। बहुत संभव है कि हम मनुष्य की प्रजाति की आखिरी पीढ़ी हों।

आत्माओं का स्टॉक

श्री अशोक कुमार
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

हर धर्म किसी न किसी रूप में आत्मा को अजर–अमर मानता है। एक और जहां हिन्दू धर्म कहता है कि आत्मा एक शरीर को छोड़कर अपने कर्मफल के अनुसार दूसरा शरीर धारण कर पुनर्जन्म लेती है वहीं अब्राहमिक धर्म जैसे ईसाई व इस्लाम ये विश्वास करते हैं कि एक दिन ऐसा आएगा जिसे कयामत के दिन के रूप में जाना जाएगा। उस कयामत के दिन हर जीव को ईश्वर के समक्ष अपने पाप–पुण्य का हिसाब देना होगा। जाहिर है ये हिसाब आत्मा ही देगी न कि कब्र में सड़–गल चुका उसका शरीर।

कुल मिलकर हर धर्म का सार यही है कि आत्मा न तो पैदा होती है और ना ही मरती है। वो अजर–अमर है। इससे ये निष्कर्ष निकलता है कि कहीं न कहीं आत्माओं का स्टॉक भी होना चाहिए जहां से आत्माएँ निकलकर विभिन्न जीवों का शरीर धारण करती हो। जाहिर है कि जब आत्मा न तो पैदा होती है और ना ही मरती है तो इस ब्रह्मांड की रचना के समय आत्माओं की कुल संख्या जितनी थी, अब भी उतनी ही रहनी चाहिए। जब इस संसार में इन्सानों से पहले केवल पशु पक्षी ही थे तो ये भी निश्चित रहा होगा कि उस समय सभी आत्माएँ पशु–पक्षी, पादप जैसी योनियों में ही रही होगी। वे सभी आत्माएँ उसी में संतुष्ट थी। जब भगवान ने इस धरती

पर इंसान को पैदा करने का प्लान बनाया और आत्माओं को मानव शरीर में जाने का ऑफर दिया तो जो चालाक आत्माएँ थी, उन्होने सहर्ष ये ऑफर लपक लिया। इस तरह मौके का फायदा उठाकर उन सभी चतुर आत्माओं ने पशु योनि त्याग, 'दो पैरों वाले विचित्र पर अद्भुत प्रतिभावान जीव', मानव के शरीर को धारण कर लिया। उसके बाद समय–समय पर प्राकृतिक विपदाएँ आई और और भी ज्यादा पशु आत्माएँ मुक्त हो मनुष्य शरीर धारण कर गयी। इस तरह उन सॉफ्टवेर रूपी आत्माओं ने अपना 'हार्डवेर' अद्यतन कर लिया। धीरे–धीरे मानवों ने इस धरती पर अपना वर्चस्व स्थापित कर लिया और शिकार और सुरक्षा के नाम पर बाकी जीवों की संख्या और भी कम कर दी। इस तरह और भी ज्यादा पशु आत्माएँ मानव शरीर धारण करने हेतु मुक्त हो गयी। अब प्रश्न ये उठता है कि जब मनुष्यों ने लाखों–करोड़ों पशुओं को मार कर उनके शरीर से आत्माओं को मुक्त कर लिया तो फिर वे मुक्त आत्माएँ कहाँ गयी? क्या वे किसी और ग्रह में जाकर परग्रही तो नहीं बन गयी या अभी भी शरीर पाने के लिए भटक रही हैं?

सच तो ये है कि वे आत्माएँ कहीं नहीं गयी बल्कि इसी धरती पर उन्होने इन्सानों के रूप में पुनर्जन्म ले लिया है। भले ही उन्होने मानव शरीर धारण कर लिया हो पर आदतें और सोच उनकी अपने पूर्व पशु शरीर वाली ही है। अगर आप अपने आस–पास का निरीक्षण करों और हर उस इंसान को देखो जो आपसे बात–व्यवहार करता है तो आप पाओगे कि उनमें से कुछ की आदतें जानवरों से मिलती जुलती हैं। कोई साँप की तरह जहर उगलता है तो कोई मक्कारी में कोवे जैसा है। कोई धूर्त लोमड़ी है तो कोई लकड़बग्घे जैसा मुर्दाखोर है। कोई भेड़–बकरी जैसा मिमियाता है तो कोई शेर जैसा गरजता है। कुछ कुत्ते बहुत ज्यादा भोंकने वाले होते हैं और कुछ तो कटखने भी होते हैं। जब ऐसे कुत्तों की आत्मा इंसान का शरीर धारण कर लेती है, तब भी वे अपने पूर्वजन्म की भोंकने और काटने जैसी आदतों से बाज़ नहीं आते हैं। ये भूतपूर्व कुत्ते, परंतु वर्तमान मनुष्य झुंड बनाकर कभी–कभार किसी शेर का भी शिकार कर लेते हैं और हमेशा इस कोशिश में रहते हैं कि इनके इलाके में कोई अन्य प्रवेश न कर सके। ये आज भी सड़क पर अतिक्रमण कर लेते हैं, सड़क के ठीक बीचों बीच अपनी गाड़ी खड़ी कर देते हैं, दूसरे की जमीन–जायदाद पर कब्जा जमा लेते हैं और कोई इनको रोके–टोके तो उसपर गुर्राने हैं और कभी–कभी तो काट भी लेते हैं। वैसे ये बहुत वफादार भी होते हैं। जिसे ये मालिक मान लेते हैं उसके हर आदेश को सर माथे पर रखते हैं और उसके आगे दुम हिलाने पर गर्व महसूस करते हैं।

अपने पूर्वजन्म के शरीर और मस्तिस्क की क्षमताओं और विशेषताओं से बंधे ये मनुष्य दिखने में भले ही मनुष्य हैं पर आचरण किसी न किसी पशु की तरह ही करते हैं। कोई स्लोथ जैसा सुस्त रहता है तो कोई नेवले जैसा फुर्तीला। कोई लोमड़ी जैसा चालाक होता है तो कोई गाय जैसा सीधा। क्या ये संयोग मात्र नहीं है कि जब पहले गिद्ध अधिक थे तो इंसान के स्वभाव में मुर्दाखोरी भी कम थी। आज जब गिद्धों की संख्या बहुत कम हो गयी है तो उसी अनुपात में ज़िंदा तो ज़िंदा मुरदों को भी नोच देने वाले मुर्दाखोर इन्सानों की संख्या भी बढ़ गयी है। ये गिद्ध की योनि में मृत जीवों को खाते थे और पर्यावरण को साफ रखने में योगदान देते थे पर इन्सानों के रूप में आकर अब ये शिकार भी करने लगे हैं और किसी न किसी तरह ऐसा माहौल रच लेते हैं कि उनको ताज़ा लाशें खाने को मिल ही जाए। जो सुवर से इंसान बने तो भी अपने पूर्वजन्म के स्वभाव को भूले नहीं। उन्होने गंदगी से किनारा नहीं किया बल्कि आज भी गंदगी में लौटने और गंदगी फैलाने में अपना भरपूर योगदान देते हैं। जो हिरण या किसी सीधे–सादे शाकाहारी से इंसान बने, वो आज भी उसी तरह सीधे हैं। आज भी उनका भोलापन नहीं गया है। आज भी अपने भोलेपन में वो किसी न किसी इंसान रूपी भेड़िये, बाघ वगैरह का शिकार बन जाते हैं। कुछ चिड़चिड़े भालुओं ने जब इंसान का शरीर धारण किया तो भी अपने अहंकार, घमंड और क्रोध पर नियंत्रण नहीं कर सके हैं। वे आज भी उसी रूप में जी रहे हैं। आज भी उनके पास आने से लोग यह सोच कर कतराते हैं कि कहीं क्रोध में ये कोई अहित न कर दें। जो पक्षी थे आज भी उड़ना नहीं भूले हैं। लोग उनको देखते हैं कि कहने लगते हैं कि फलाना बहुत 'उड़' रहा है।

अब सवाल ये भी पैदा होता है कि कुछ इंसान तो ऐसे होंगे जिनकी आत्मा को इंसान के शरीर में रहने का कई जन्मों का तजुर्बा हो। बेशक ये आत्माएँ कई जन्मों से इन्सानों के शरीर में रहने के कारण परिपक्व हो गयी हैं। ये लोग बुद्धिमान और तार्किक कहे जाते हैं। ये सभी प्राणियों से प्रेम करने वाले, परोपकारी, करुणामयी, समदृष्टि रखने वाले, दयालु, मृदुभाषी और भेदभाव से रहित होते हैं। फिर भी मानव समाज में संख्या के दृष्टिकोण से ये लोग अल्पसंख्यक हैं।

अवसाद- एक अदृश्य शत्रु

कु0 अर्चिता ध्यानी
श्रीमती प्रेरणा मझूला, स0लें0प0अ0

जैसे–जैसे मानव ने विभिन्न स्तरों पर प्रगति की है, वैसे–वैसे हमारे जीवन यापन का ढंग भी परिवर्तित हुआ है। आराम, प्रसन्नता व सुख का जीवन यापन करने की आकांक्षा किसे नहीं होती। हमारा पूरा जीवन तो इसी एक मात्र लक्ष्य को पूर्ण करनें में लगा रहता है। पर कहीं न कहीं इस होड़ में, अपनी आकांक्षा ही नहीं अपितु महत्वकांक्षाओं को पूर्ण करनें में हम अपना धीरज ही खो बैठते हैं।

अपनी इच्छाओं को पूर्ण करने में हम अपना तन–मन–धन तो लगाते ही हैं पर शायद उचित ढंग से मनन नहीं करते। अत्यधिक बार हमारी इच्छाएँ दूसरे से बराबरी की होती है। हम अपने आपको दूसरे से आंकने में खो जाने हैं। ईष्या दुरूख का सबसे बड़ा कारण है। हम भूल जाते है कि ईश्वर ने हम सबको अलग नहीं बनाया है। हम सब में अपनी विशेषताये व दुर्बलताएँ है। और संभवतः तभी तो जग रंग–बिरंगा है, दुनिया अनोखी है। यहाँ सभी प्रकार के व्यक्तित्व है।

क्या आप सोच सकते है, अगर हम सब एक जैसे होते परन्तु हम सब बातों को छोड़कर एक अलग ही पथ पर अग्रसर हो जाते है। और कामनाएँ पूर्ण न होने पर अवसाद की ओर बढ़ जाते

हैं। अवसाद एक ऐसा विष है जो सर्वप्रथम हमारे मन, फिर मस्तिष्क ओर तन को दुष्प्रभावित करता हैं।

मनोचिकित्सक के पास जाना तो दूर, अत्यधिक बार लज्जा, कुंठा व आत्मग्लानि के कारण हम अपनी बात किसी से साझा नहीं करते कि कोई हमें दुर्बल न समझे। हम यह नहीं समझ पाते कि अधिकांश समय पर दुर्बल बन कर अपने विचार व्यक्त करना हमारा सबसे बड़ा बल होता है। संवाद में बहुत शक्ति है। अपनी मन की बात कहकर, दूसरों की बात सुन कर, आपस में हँस कर हम अवसाद जैसी व्याधि को कोसो दूर भगा सकते है। अपनी सफलताओं ही नहीं अपनी विफलताओं पर भी हमे गर्व होना चाहिये। क्योकिं सफलताओं से अधिक विफलता व विषय परिस्थिति ही हमें इनसे लड़ने के लिये प्रेरित करती है। विफलताओं को अवसाद का कारण न बनाएँ, इन पर चिंतन करके, सफलताओं का नया मार्ग बनाये।

भाषा की सरलता, सहजता और शालीनता अभिव्यक्ति को सार्थकता प्रदान करती है। हिंदी ने इन पहलुओं को खूबसूरती से समाहित किया है।

– नरेंद्र मोदी (प्रधान मंत्री)

मूल्य आधारित शिक्षा

श्रीमती रेखा
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

समस्त ब्रह्मांड मे पृथ्वी ही एकमात्र ऐसा ग्रह है जहा जीवन विद्यमान है। पृथ्वी पर विधमान सभी जीवो का अपना एक विशेष महत्व है परंतु इन सभी जीवो मे इंसान का सबसे अलग एक महत्वपूर्ण दर्जा है। इंसान के इस महत्वपूर्ण दर्जे की वजह इंसान का बाकी जीवो की तुलना मे अधिक बुद्धिमान तथा समझदार होना है। इंसान को मिली हुई बुद्धि तो प्रकृति की देन है किन्तु उसके समझदार होने की वजह प्राकृर्तिक नहीं अपितु उसे मिलने वाली शिक्षा है। इस शिक्षा का मूल्याधारित होना अत्यंत जरूरी है क्योकि यदि शिक्षा मूल्य आधारित होती है तो इंसान प्रकृति तथा प्रकृति पर विधमान समस्त जीवो के रक्षक की भूमिका अदा करता है अन्यथा यही इंसान भक्षक भी बन जाता है।

इंसान को मिलने वाली शिक्षा के अनेक स्रोत तथा अनेक चरण है जो उसके स्वयं की माँ की कोख मे अस्तित्व मे आने के साथ ही शुरू हो जाते है। पृथ्वी जन्म लेने के पश्चात इंसान के जीवन मे शिक्षा का सर्वप्रथम स्रोत उसका अपना परिवार होता है और परिवार के बाद उसके चारो तरफ का समाज। उसके बाद विद्यालय का नंबर आता है जहा पर एक इंसान औपचारिक शिक्षा ग्रहण करता है।

इंसान के हर क्षण मिलने वाली शिक्षा का मूल्याधारित होना अत्यंत आवश्यक है क्योकि किसी भी इंसान की जीवन में मूल्यों का अहम योगदान होता है। इंसान इन्हीं के आधार पर अच्छे–बुरे अथवा सही–गलत की पहचान कर पाता है। परिवार, समाज और विद्यालय के अनुरूप ही एक व्यक्ति में सामाजिक गुणों एवं मानवीय मूल्यों का विकास होता है।

प्राचीन काल के भारत में गुरुकुलों में सभी प्रकार की शिक्षा मिलती थी। इस शिक्षा मे इंसान के जन्म लेने से पहले सें लेकर मृत्युके बाद पुनर्जन्म होने तक की शिक्षा शामिल होती थी। इस शिक्षा मे जीवन के सभी पहलुओं से संबन्धित ज्ञान का उचित अनुपात होता था। परंतु बदलते समय के साथ यह अनुपात परिवर्तित होता चला गया। आज वैश्वीकरण की 21 वीं शताब्दी में मूल्य आधारित शिक्षा का महत्व तो उतना ही है परंतु इस शिक्षा मे रहने वाले विषयो का उचित अनुपात बिगड़ता जा रहा है। आज मानव को मिलने वाली शिक्षा का मुख्य लक्ष्य भौतिकवादी संसाधनो को प्राप्त करना तथा उनका ज्यादा से ज्यादा भोग करना है। इस विकृति लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए इंसान गलत या अवैध तरीको को अपनाने मे भी नहीं चूक रहा है। इसी विकृती का दुष्परिणाम अनेक रूप मे मानव के सामने दिन प्रतिदिन आ रहा है जैसे कि – हिंसा, असहिष्णुता, अवसाद, सांप्रदायिकता, जातिवाद एवंजीवन से जुड़ेविभिन्न प्रकार के भेदभावआदि। इस प्रकार की बढ़ती प्रवृत्ति मानव में मूल्याधारित शिक्षा के ह्रास का ही परिणाम है।

मूल्याधारित शिक्षा प्राप्त नहीं करने के कारण आधुनिक मानव समाज मे प्राचीन काल से बने हुए अच्छे नियमों का पालन ईमानदारी से नहीं कर पा रहा है तथा वर्तमान समय के अनुसार समस्त जीवो के कल्याण के लिए जरूरी नियम भी नहीं बना पा रहा है। भोगवाद को बढ़ावा देते हुए इंसान पूरी पृथ्वी एवं समस्त प्राणियोंके जीवन को दांव पर लगाने पर तुला हुआ है।

वर्तमान में मानव को मिलने वाली मूल्यविहीन शिक्षा के लिये मानव क़े माता पिता, उसका समाज एवं शिक्षक सभी समान रूप से जिम्मेदार है क्योंकि ये खुद अतार्किक जड़बुद्धि, सामाजिक–धार्मिक पूर्वाग्रहों से ग्रस्त होने की वजह से तर्कशील होकर नहीं सोच पाते है। इन पर जाति, धर्म और सामाजिक परिवेश की पहले से बनी धारणाएँ हावी रहती हैं। इन्ही रूढ़िबद्द मान्यताओं के अनुसार सभी चलना चाहते है। जब तक परिवार, समाज एवं शिक्षक आपने आप

को मानवीय मूल्यों, आदर्शो, लक्ष्यों और सिद्धान्तों से युक्त शिक्षाएवं तर्क की कसौटी पर रख कर नहीं सोचेंगे, तब तक वे न तो अपने व्यवहार में परिवर्तन ला सकते है न ही विद्यार्थियों में मूल्यों के प्रति आस्था विकसित कर सकते है।

आमतौर पर शिक्षक बच्चों को पाठ पढ़ना और नैतिक सीख देना ही काफी समझते हैं और विद्यार्थी के व्यवहार में मूल्यगत बदलाव पर कम ध्यान देते है। शिक्षक का धर्म है कि वह पाठ्य–पुस्तक में दिए गए गए मानवीय मूल्यों का महत्व समझे, उन्हें अपने जीवन व्यवहार का हिस्सा बनाए, फिर इन्हे बच्चों के दैनिक व्यवहार में लाने का प्रयास करे। स्कूलों से समाज की अपेक्षा होती है कि वह तर्कशील मनुष्य प्रदान करे क्यूंकि यदि स्कूलों में ही जरूरी मानव मूल्यों की शिक्षा नहीं दी गयी तो मानव कहीं न कहीं प्रकृति एवं राष्ट्र के प्रति अपनी नैतिक ज़िम्मेदारी निभाने से चूक जाएंगे। इसलिए आवश्यक है कि पाठ्य– पुस्तकों में उल्लिखित सभी मानवीय मूल्यों एवं आदर्शो के प्रति शिक्षक एवं समाज जागरूक हो, ताकि न केवल वर्तमान संसार अपितु उसकी आने वाली पीढ़िया भी जागरूक, तर्कशील, सामाजिक सदभाव युक्त एवं मानवतावादी बन सके।

भारतीय सभ्यता की अविरल धारा प्रमुख रूप से हिंदी भाषा से ही जीवंत तथा सुरक्षित रह पाई है।

– अमित शाह (गृह मंत्री)

हठ योग

श्रीमती रेखा
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

योग प्राचीन काल से ही भारत की संस्कृति का हिस्सा रहा है। हमारे देश में अनेक ऋषि–मुनि हुए हैं जिन्होंने योग के नए दर्शन,रूप एवं विधाएँ समाज को दी हैं। प्रत्येक दर्शन ने योग को अलग ही आयाम दिया है। उन्हीं में से योग का एक प्रकार है हठ योग। यह सबसे प्रचलित एवं प्राचीन योग प्रणाली है। इसके अभ्यास से शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य में वृद्धि होती है। इस योग के माध्यम से मेरुदंड (रीढ़ की हड्डी) में लाचीलापन बढ़ता है, रक्त संचार सुदृढ़ होता है, शारीरिक अशुद्धियाँ दूर होती हैं। हठ योग के नाम से ऐसा प्रतीत होता है कि इसका अर्थ जबरदस्ती योग करना होता है। हठ 'है' एवं ''ठ'' दोनों शब्दों के संयोग से मिलकर बना है। 'है'– अर्थात सूर्य तथा ृ=श्दृ अर्थात चंद्रमा। हठ योग का जन्मदाता आदिदेव भगवान शिव को माना जाता है। परंतु जन मानस में इसको प्रसिद्ध योग महर्षि पतंजलि ने किया था। इस योग से मन में छुपी अनंत शक्तियों का विकास करके मनुष्य अनंत की प्राप्ति कर सकता है। इस योग के सात अंग हैं,जो इस प्रकार हैं–

1. **षटकर्मः–** अर्थात छः कर्म। यह आसन शरीर में शक्ति की वृद्धि करता है। इसके अंतर्गत नेति,धौति,नौली, कपाल भाति,त्राटक एवं बस्ति आते हैं।

2. आसनः आसन वह होता है जिसमें मनुष्य आरामदायक अवस्था में बैठ सके। हठ योग में आसनों पर बहुत बल दिया गया है। आसनों से शरीर की व्याधियाँ दूर होती हैं। शरीर शक्तिशाली, सुदृढ़,व्याधिरहित बनाता है। इस आसनों का प्रमुख उद्देश्य कुंडलिनी शक्ति जागृत करना होता है।

3. प्राणायामः प्राणायाम का क्षेत्र बहुत व्यापक है। प्राणायाम अर्थात प्राणों का आयाम करना, उनको साधना। कुंडलिनी शक्ति जागृत करने के लिए प्राणायाम अति आवश्यक है। शरीर के स्वास्थ्य के लिए जो कार्य आसान करते है वही कार्य प्राणायाम हमारे मन के स्वास्थ्य के लिए करता है।

4. मुद्राः मुद्रा भी कुंडलिनी शक्ति जागृत करने में सहायक है। विभिन्न प्रकार की मुद्राएँ हमारे मन को स्थिरता प्रदान करके आत्मा से मिलन कराने में सहायक होती है।

5. प्रत्याहारः हमारे शरीर में पाँच इंद्रियाँ होती है, जिनके अलग–अलग कार्य हैं, जैसे– आँखों से देखना, जीभ से स्वाद लेना, नाक से सूंघना इत्यादि। प्रत्याहार में इन्हीं इंद्रियों को साधने का प्रयास किया किया जाता है। प्रत्याहार का निरंतर अभ्यास करने से हमें अपनी इंद्रियों एवं मन पर विजय प्राप्त हो जाती है।

6. ध्यानासनः ध्यान करने का उद्देश्य हमारी बिखरी हुई शक्तियों को एकत्रित करके ऊर्जा का समावेश कर हमारे शरीर में सामंजस्य बिठाना है। इसके माध्यम से मन एवं आत्मा को असीम आनंद की अनुभूति होती है। मनुष्य को नित्य सकारात्मक ऊर्जा का अनुभव होता रहता है, जिससे वह अपने जीवन की कठिनाइयों में भी सदैव मुस्कुराकर लड़ सकता है।

7. समाधिः उक्त हठ योग के सभी प्रकारों में समाधि सबसे कठिन है। प्राचीन काल में ऋषि–मुनि वर्षों तक समाधि में रहकर तप किया करते थे।

उक्त सभी हठयोग के अंग हैं। इस योग को किसी योग शिक्षक के माध्यम से ही किया जाना चाहिए। इस योग के माध्यम से आधुनिक जीवन की हर चुनौती को आसानी से पराजित कर सकते हैं।

मानव संस्कारों का बदलता स्वरूप

श्री गजेंद्र भट्ट
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी (तदर्थ)

आज हम सभी लोग एक ऐसे समाज में रह रहे हैं जहां दैनिक भोगविलास के सम्पूर्ण साधन उपलब्ध हैं। आज मनुष्य के पास अपनी आवश्यकता हेतु समस्त प्रकार के सुख–साधन प्रचुर मात्रा में उपलब्ध हैं। फिर भी कहीं न कहीं हम खुद को असंतुष्ट पाते हैं। दिन प्रतिदिन हमारी आवश्यकता बढ़ती जा रही है। आवश्यकता की कोई सीमा नहीं है, एक के बाद एक नयी आवश्यकता स्वतः उत्पन्न हो जाती है। सुबह से लेकर शाम तक हम लोग इन सभी भोग विलास रूपी साधनों को जुटाने में लगे रहते हैं। हम लोग दिन प्रतिदिन इन सुख संसाधनों में इस तरह जकड़ते जा रहे हैं कि कहीं न कहीं हमने अपने वास्तविक मानव सुख को खो सा दिया है। जिस कारण हमने कहीं न कहीं अपने नैतिक मूल्यों एवं आदर्शों को खो दिया है। फलस्वरूप हमारा आने वाला भविष्य कहीं न कहीं इन आदर्शों एवं मूल्यों के अभाव में कोरा सा दिखाई देता है।

आज हम लोग सुख संसाधनों की इस नैय्या में सवार होकर इस प्रकार आनंदित हैं कि हमे इनसे होने वाले दुष्प्रभाव दिखाई नहीं देते और यदि दिखाई देते भी हैं तो हम इनसे चाह कर भी अंजान बने हुए हैं। इस भाग दौड़ भरी जिंदगी में हम लोग इस तरह उलझते जा रहे हैं कि हम

लोग अपने घर परिवार, रिश्ते नाते एवं दोस्त आदि से दूर हो चले हैं। जिसका आभास हम युवा पीढ़ी को आज नहीं बल्कि समय बीत जाने पर होगा लेकिन फिर हम उम्र के उस पड़ाव पर होंगे कि हम चाहकर भी इस दिशा में कोई कदम नहीं उठा पाएंगे। प्राचीन समय में मनुष्य के पास सुख संसाधन कम थे लेकिन लोगों में आपस में प्रेम सदभाव था, लोग एक दूसरे की भावना को समझते थे, आपस में सहयोग की भावना थी। वरन आज वर्तमान में स्थिति इसके विपरीत है। आज मनुष्य ने समाज से दूरी बना ली है। मनुष्य अधिक से अधिक अपने परिवार तक सीमित है। समाज में नैतिकता न के बराबर है। आपसी प्रेम और सदभाव की जगह आज छल कपट ने ले ली है। इसी कारण वर्तमान में हमारे समाज में विभिन्न तरह के अपराध हो रहे हैं।

संस्कारों की सबसे अधिक जिम्मेदारी माता–पिता, परिजनों और शिक्षकों की होती है। यह भी सत्य है कि संस्कार मात्र कहने सेए बोलने से नहीं आते हैं बल्कि ये तो व्यवहार से आते हैं, आचरण से आते हैं, सद्कर्म से आते हैं और चारित्रिक उज्ज्वलता से आते हैं। माता–पिता जैसा व्यवहार करेंग, लगभग वैसा ही उनके बच्चे करते हैं। हमेशा याद रखें, आपके क्रियाकलापों एवं व्यवहार का बारीक निरीक्षण आपके बच्चे कर रहे हैं, ध्यान रहे, वे कभी यह नहीं कह दे कि ये आपके कैसे संस्कार हैं

प्रेरणा स्रोत :–

शिक्षा और संस्कार जहां
सद्गाव और प्यार जहां
हाथ मिलेंगे दिल मिलेंगे
खुशियों का संसार वहां।

अतः अपनी इस अभिव्यक्ति के द्वारा मैं आप लोगों से आशा करता हूँ कि हम एक ऐसे समाज का स्थापना करें जिसमे प्रेम सदभाव होए जिसमे नैतिकता का समावेश हो। इसके लिए हमे पहल अपने घर परिवार से करनी होगीए जिसमे हमे खुद में सुधार के साथ साथ अपनी आने वाली पीढ़ी को इस तरह से नैतिक साक्षर करना होगा कि विकास की इस अंधी दौड़ में भागने के बजाए हम लोग अपने जीवन की सार्थकता को समझे एवं एक ऐसे समाज का निर्माण करें

जिसमे नैतिक मूल्यों का समावेश हो। हमे ऐसे नैतिक आयाम वैश्विक मंच पर स्थापित करने हैं कि एक बार पुनः हम पूरे विश्व के सामने अपनी आदर्श संस्कृति के लिए जाने जाए। हमे अपनी पुरातन संस्कृति के पद चिन्हों पर चलना चाहिए। जिसकी बदौलत कभी भारत ने वैश्विक जगत में अपना परचम लहराया था।

हिंदी भाषा एक ऐसी सार्वजनिक भाषा है,
जिसे बिना भेद-भाव प्रत्येक भारतीय ग्रहण कर सकता है।

– मदन मोहन मालवीय

स्वतन्त्रता दिवस

श्री अंकित जैन
भाई, मानसी जैन (स.ले.प.अ.)

स्वतन्त्रता दिवस पर एक दिन के देश प्रेम का दृश्य हमने हर गली, मोहल्ले, दफ्तर, बाजार, समाचार आदि पर देखा है। कुछ ऐसे लोग भी है जिन्होने ताउम्र अपनी धड़कन हर सांस देश के नाम की है। क्या हम उनमें से एक है। जो अपने आपसे पूछते पर अगर हम लडखड़ा जाये तो इसका जवाब क्या समझा जाये, जो एक यक्ष प्रश्न है।

जब मैंने अपने आप से ये सवाल किया तो, मुझे इसका जवाब नही मिला। इसे मैं क्या समझूं कि क्या वाकई इस राष्ट्रीय पर्व से मेरा कोई वास्विक रिश्ता है या मैं बस इसको एक छुट्टी के रुप में मनाता हूँ या बस एक दिखावा करता हूँ कि मैं एक देशप्रेमी हूँ। क्या इस देश के लिये मैंने कभी कुछ किया है। क्या केवल तिरंगा लहराने से कोई देशभक्त बन सकता है। अगर ये दिखावा है तो यकीन मानिए हमें आज भी आजादी नहीं मिली है। मैं इसमें किसी और को शामिल नहीं करना चाहता बस यही कहना चाहता हूँ कि मेरी तरह बस एक दिन का राष्ट्रीय पर्व मनाते है उन्हे अपने आज से यह पूछना चाहिये कि क्या वो हकीकत में एक देशभक्त है या फिर ....बनते है।

हमारे देश में आसपास बहुत से ऐसे लोग रहते है जो हमसे बहुत निचले पायदान पर अपना जीवन व्यतीत करते है। क्या कभी हमने साल में किसी एक दिन भी उनकी कोई मदद की। क्या उस वक्त हमारे मन में हमको कहा कि किसी गरीब, असहाय की मदद की जाये जो वास्तव में एक सच्चा प्रेमी है, जो समाज में एकता और समानता के अधिकार का सूचक है।

धार्मिक भेदभाव के वशीभूत छुआछुत की बीमारी को हम खत्म कर पाये। अगर हम आज की रुढिवादी मान्यता के आधार पर जी रहे है तो फर हम उसी गुलामी के दौर मे जी रहे है, तो फिर हम, किस आधार पर स्वतन्त्रता दिवस जैसे पर्व, जिसमें पूरा हिन्दुस्तान शामिल है, मना रहे है।

हमको सबसे पहले उन जंजीरो को तोड़ना होगा जिनकी जकड़ में हम खुद को भगवान समझ रहे है जबकि हम एक बंधक और गुलाम से बढ़कर कुछ नही है। इन बेडियों को तोड़कर ही हम एक नये समाज की नींव रख पायेगें, तब जाकर हम खुली हवा में शान से स्वतन्त्रता दिवस मना सकेंगे।

हिंदी राष्ट्रीयता के मूल को सींचती है
और उसे दृढ़ करती है।

– पुरूषोत्तम दास टंडन

प्रलयकाल

श्री अंकित जैन
भाई, मानसी जैन (स.ले.प.अ.)

इस काल के मुश्किल दौर में,
जीने की राह बनानी है,
दूर रहकर अपनो से दुनिया में,
जीना है, मन में ठानी है।
ये साल रहा है, दर्द भरा,
रो रहा गगन, रो रही धरा,
संभल के तुझको है चलना यहाँ,
गमगीन बनी ये जिन्दगानी है
जीना है, मन में ठानी है।
करीब रहने से बेहतर दूरी,
है मन दुखी कुछ है मजबूरी
सांसो का चलना भी है जरुरी
भले आँख में ढेर पानी है
जीना है, मन में ठानी है,

जो नियम है उसको निभाये जा
मन में विश्वास को जगाये जा
ना बिखरेगा कुछ तु सजाये जा
उम्मीद की किरण जगानी है
जीना है, मन में ठानी है
है हिन्द गजब की मुश्किल में,
उथल पुथल है, हर एक दिल में,
है मौत ख़डी भीड महफिल में,
हर जान की जान बचानी है
जीता है, मन में ढानी है।
है थाम के रखना हर पल को,
खुल के जी लेंगे हम कल को
तू बस में रख मन चंचल को
ये बात सभी को समझानी है
जीना है, मन में ठानी है।
माँ भारती को जरुरत हमारी है,
हर विवेक प्रलय पर भारी है
महामारी की हार में जीत सजी है
दुनिया को ये चीज दिखानी है
जीना है, मन में ठानी है।
होगा भस्म जल्द ये कोरोनासुर
खिलेगा फूल, हँसेगा जंग जरुर
जो आज है बेबस और मजबूर
उन्हे कल खुशियां बरसानी है
इस काल के मुश्किल दौर में
जीने के राह बनानी है..............

निर्भया

श्री अश्विनी कुमार पाण्डेय
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

पहले एक बेटी ने तन और मन पर आघात सहे।
तन चोटिल, मन चोटिल, जाने कितने प्रतिघात सहे।।
लूटा जीभरकर उसको, सब कुछ तार–तार किया।
जी भरा नहीं जब इससे भी, उसको फिर मार दिया।।
रोयी होगी, बिलखी होगी, फिर भी प्रतिकार किया होगा।
जाने कैसे–कैसे उन्होने उस पर वार किया होगा।।
जान गँवा बैठी वह फिर भी मन में आशा होगी।
पर कानूनी दाँव–पेंच में उलझी न्याय की डोरी है।।
दिन प्रतिदिन बजती एक नयी रणभेदी है।
कुत्सित मंसूबे जीत रहे है, कानून ज्ञानों से।।

दुनिया सारी देख रही है, आँख बंद कर अन्जानों से।
फाँसी दो, फाँसी दो, चहुओर धरा पर गुँज रहा है।।
न्याय दिलाने को परिवार न्यायालय में नित जुझ रहा है।
न्याय मिलेगा बेटी को आशा जब–जब जगती है।।
दुषित मंसूबों से फिर, काल चाल नयी चलती है।
फिर दूर क्षितिज में छा जाता एक अँधेरा है।।
लगता है अभी शाम हुई है, दूर भी सवेरा है।
गर मिले देर से न्याय, तो वह न्याय नही होगा।।
मरकर भी वह तड़ेपेगी, क्या यह अन्याय नहीं होगा।
नियति चाल चले जितने भी, पर वह बच नहीं पायेगा।।
आततायी अपराधी फाँसी चढ़ेंगे, दिन वह भी आयेगा।
भोर दूर नही है, क्षितिज पर लालिमा छाने वाली है।।
जल्दी ही न्याय मिलेगा, खुशखबरी आने वाली है।

हिंदी हमारे राष्ट्र की अभिव्यक्ति
का सरलतम स्रोत है।

– सुमित्रानंदन पंत

मातृ दिवस

श्री अश्विनी कुमार पाण्डेय
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

नया त्योहार है, वो फिर से मनाने आया है।
मैं करता हूँ प्यार तुम्हें कितना, बताने आया है।।
मैं तेरा हूँ अब, तू मेरी है माँ यह समझाने आया है।
आज फिर वह माँ के एहसान चुकाने आया है।।
हाथों में लड़की मिठाई, और फल की थैली है।
पूछ रहा है आज, माँ साड़ी क्यू तुम्हारी मैली है।।
नई–नई लाया हूँ पहनो उसको फिर लाऊँगा।
अगले साल जब आऊगां, कुछ और नई मैं लाऊँगा।।
देखो कितनी प्यारी लगती है, तुम पर यह।
क्या कहूँ कहने सुनने को अब क्या कुछ शेष रहा।।

आत्मा जाने कब की मर चुकी, देह केवल अवशेष रहा।
क्या आ जाता है हर साल, मुझसे बस प्यार जताने को।।
मेरा भी कोई अपना है, यह मुझको बतलाने को।
अब केवल वृद्धाश्रम की यह दीवारें भी अपनी है।।
यह फल है मेरे कर्मो का, या यह मेरी करनी है।
हर दुख सह कर पाला था, हर बार तुम्हे सम्हाला था।।
जो तुमने छोड़ दिया थाली में, मेरा वही निवाला था।
हर नांज सहे थे तेरे, पर तुम्हें आँच नहीं आने दी।।
तुम एक दिन मुझको सम्हालोगे, यह आस नही जाने दी।
पर जाने कैसे तुमसे मेरा बोझ सहा नही गया।।
मेरे घर में ही तुमसे, मेरे साथ रहा नही गया।
जाओ अब बहुत देर हो गयी, मुझको अब सोना है।।
तुम पर मैं भार बनकर हूँ जिन्दा, बस यह रोना है।
शायद अगली बार तुम्हें यह भी कष्ट उठाना पड़े।।
मैं ही ना रहूँ दुनिया में, तुम्हे यहा आना ना पड़े।
यह संवाद हजारो माँओ की, कितनी माताएँ रोती है।।
याद करके अपने प्रियजन को एकांतवास में सोती है।
जब तक ऐसा है, औचित्य क्या है मातृ दिवस मनाने का।।
माँ सारा ब्रहमाण्ड है, बात क्या यह भी बताने की।

कोरोना - एक महामारी

श्री योगेश त्यागी
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

चीन के वुहान शहर से निकले कोरोना वायरस ने आज पूरी दुनिया को अपनी गिरफ्त में ले रखा है। पूरी दुनिया के साथ–साथ भारत भी इस महामारी से पूरी तरह से जकड़ चुका है। इस महामारी ने दुनिया भर में लाखों लोगों की जान ले ली है, और न जाने कितने लोग अब भी इससे संक्रमित हैं। भारत ने भी इस महामारी से बचने के लिए बहुत से कदम उठाये जैसे पूरे भारत में एक दिन के लिए कर्फ्यू, फिर लॉकडाउन 1,2......... फिर बाद में अनलॉक 1,2.......लेकिन लॉकडाउन के बाद इस बीमारी ने अपनों जड़ें भारत में जमा दीं। आज सारे भारतवासी इस बीमारी से प्रभावित हैं। लॉकडाउन में कितने ही प्रवासी मजदूरों ने सड़क –हादसों में अपनी जान गँवा दी। मार्च से सभी स्कूल–कॉलेज बन्द कर दिये गये। कितनी ही परिक्षाएं रद्द हुई। बच्चों पर आनलाइन पढ़ाई का दबाव बना। बहुत से देशों के लोगों ने समय–समय पर आई कई महामारियों से अपनी जान गँवाई है। जैसे स्पैनिश फ्लू, प्लेग आदि। इन्ही महामारियों की तरह कोरोना महामारी आज हमारे बीच है। कई देशों के वैज्ञानिक मिलकर वैक्सीन को खोज रहे हैं। लेकिन अभी तक सफलता हाथ नहीं लगी है। इस महामारी के चलते न जाने कितने लोगों को

जान, माल का नुकसान झेलना पड़ा। अब जल्दी से जल्दी वैक्सीन की खोज हो और लोग खुली हवा में पहले की तरह साँस ले पायें और सभी लोगों की जिन्दगीं पटरी पर लौट आये। तब तक के लिए हम सतर्क रहें, ध्यान रखें, बार–बार हाथों को साबुन अच्छे से धोयें। सावधानी ही इसका बचाव है।

आप जिस तरह बोलते हैं, बातचीत करते हैं,
उसी तरह लिखा भी कीजिए। भाषा बनावटी नही होनी चाहिए।

– महावीर प्रसाद द्विवेदी

अपराध

श्रीमती रेणुका पँवार
वरिष्ठ लेखापरीक्षक

मन के भावों को,
समझने का प्रयास करता हूँ।
देखो, मैं यह कैसा अपराध करता हूँ।
अरे यहाँ तो,
अतीत के दृश्यों का कुहासा है।
भविष्य भी कितना धुँआसा है।।
लग रहा है, कसती मँझधार में है।
भँवर भी कितना असरदा है।
मरघट से संसार का आभास करता हूँ।
देखो, मैं यह कैसा अपराध करता हूँ।।
मन के भावों में विचरण कर,

भविष्य की राह तकता हूँ।
देखों, मैं यह कैसा अपराध करता हूँ।।
मन में बंधी उमंगो से,
अम्बर की तलाश करता हूँ।
निर्वाक हिमालय सा,
शिखर पर मुकुट का आगाज करता हूँ।।
ज्ञान की लपटों से आज,
तमवेधिनी किरण का संज्ञान करता हूँ।
धनुष व तरकस संग,
युद्वेला का आह्ववान करता हूँ।।
मन के भावों को समझने का प्रयास करता हूँ।
देखो, मैं यह कैसा अपराध करता हूँ।।
मन के भावों का संज्ञान,
इतना भी नहीं आसान।
हो जाता हूँ मैं सबसे बेजान।।
निशब्दता के आवरण का,
ओढ़न तैयार करता हूँ।
देखो, मैं यह कैसा अपराध करता हूँ।।
मन के भावों को,
समझने का प्रयास करता हूँ।
देखो, मैं यह कैसा अपराध करता हूँ।।

मन की बातें

श्रीमती हिना सलीम
वरिष्ठ लेखापरीक्षा

जितना भी कह लो पर कुछ बाते दिल में रहती है।
कुछ को शब्द नही मिलते और कुछ संकोच का डर सहती है।
मनमाफिक रास्तो पर कौन चला है, जो ये चल पायेगी,
हाँ, मेरी यह रचना भी कुछ मोड़ो पर मुड़ कर बहती है।
नैतिक और सामाजिक सीमाओं को अपने ध्यान में रखकर
श्रोताओ के चेहरो के हावो भावो को गौर से तक कर
रोक कर, थाम कर, काट कर जज्बातों को जितना
सबको पच पाये सयंम से बस उतना कहती है।
चाहे जितना भी कह लो, पर कुछ बाते दिल में रहती है।

दावे साहस के, हिम्मत के, चाहे जितने किये हो मैने,
चिंतन के चूल्हे में लेकिन कुछ आग ऐसी होती है,
जो परतो के भीतर भीतर केवल अंतर को दहकाती है।
चाहे जितना भी कह लो पर कुछ बाते दिल में रहती है।

हिंदी चिरकाल से ऐसी भाषा रही है जिसने मात्र
विदेशी होने के कारण किसी शब्द का बहिष्कार नहीं किया।

– डॉ राजेन्द्र प्रसाद

मेरी उन शामों में एक शाम सुहानी सी

श्री मनोज
भाई, अमित वर्मा (व.ले.प.)

नदी का किनारा पानी की कलकलाहट
झरनों की सफेदी से आती हुई तरावट
उड़ते हुए बादलों से उस बरखा का जो गिरना
नदी में हंसते जल संग उन बूंदों का मिलना
दूर तलक फैले हुए किस्से उन परिंदों के
संग साथ विटप पर लौटें गाते हुए कहानी सी

मेरी उन शामों में एक शाम सुहानी सी

गौधूली वेला का आना पुष्पों का हँस कर झुक जाना

हाथो में उसके हाथ लिए संग दूर तलक उसके जाना
उसका कहना मेरा सुनना, सुनकर दिल में दिल का खिलना
मेरी बातों पर शर्माना, शर्माकर उसका सिमट जाना
हैं मन के गुलिस्तां में यादें जो वर्षों कई पुरानी सी

मेरी उन शामों में एक शाम सुहानी सी

कुछ अनकहे किस्से मेरे थे, आंखों में उसके कहानी थी
जैसे सावन में गाती कोयल और बरखा की ऋतु सुहानी थी
वो बैठी कुछ पल संग मेरे बिखरी जुल्फों का साया था
मेरे सवालों का हर उत्तर उसके अधरों में समाया था
सपनों की सच्चाई में घुलती मिठास जवानी सी
मेरी उन शामों में एक शाम सुहानी सी..........

देवनागरी ध्वनिशास्त्र की दृष्टि से
अत्यंत वैज्ञानिक लिपि है।

– रविशंकर शुक्ल

सेना हिंदुस्तान की

श्री अगम सिंह
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी, तदर्थ

''वन्दे मातरम, वन्दे मातरम, वन्दे मातरम ।
वन्दे मातरम, वन्दे मातरम, वन्दे मातरम'' ।।

चले हड़पने भारत माँ से घाटी ये गलवान की ।
तुमको सबक सिखा देगी ये सेना हिंदुस्तान की ।।

''वन्दे मातरम, वन्दे मातरम, वन्दे मातरम ।
वन्दे मातरम, वन्दे मातरम, वन्दे मातरम'' ।।

घात लगाकर किया था हमला उन चीनी शैतानों ने ।
फिर एक के बदले दो को मारा भारत माँ के जवानो ने ।।

पैंगोंग झील पर भी चाल चली इन ड्रैगन बेईमानों ने ।
वहाँ भी उनको विफल किया भारत के वीर जवानो ने ।।

कह अगम सौगन्ध मुझे है शहीदो के बलिदान की ।

तुमको सबक सिखा देगी ये सेना हिंदुस्तान की ।।

''वन्दे मातरम, वन्दे मातरम, वन्दे मातरम ।

वन्दे मातरम, वन्दे मातरम, वन्दे मातरम'' ।।

जल में, थल में और व्योम में बजता भारत का डंका ।

आँख मिलकर देख ले जिसको भी है कोई आशंका ।।

सेना से कदम मिलाने को तैयार है भारत की जनता ।

बन हनुमान हम भस्म करेंगे तेरी सोने की लंका ।।

त्रिशूल चलेगा भोले का और गदा उठे हनुमान की ।

तुमको सबक सिखा देगी ये सेना हिंदुस्तान की ।।

''वन्दे मातरम, वन्दे मातरम, वन्दे मातरम ।

वन्दे मातरम, वन्दे मातरम, वन्दे मातरम'' ।।

पहले कोरोना की तूने महामारी फैलाई है ।

दुनिया को मित करने को फिर हमसे छेड़ी लड़ाई है ।।

जब–जब भारत की धरती पर तूने नजर गड़ाई है ।

भारत माँ के जांबाजों ने तुझको धूल चटाई है ।।

लगता है ये मिलीभगत है चीन और पाकिस्तान की ।

तुमको सबक सिखा देगी ये सेना हिंदुस्तान की ।।

''वन्दे मातरम, वन्दे मातरम, वन्दे मातरम ।
वन्दे मातरम, वन्दे मातरम, वन्दे मातरम'' ।।

पहले तो तुझ पर हम कूटनीतिक चक्र चलायेंगे ।
फिर तेरे फर्जी सामानों की होली हम जलायेंगे ।।

तू दिवा स्वप्न जो देख रहा उन्हे धूल मे मिलायेंगे ।
तू बहुत रुला चुका दुनिया को अब तुझको हम रुलायेंगे ।।

तू इन्सानो के चोले मे हरकत करता शैतान की ।
तुमको सबक सिखा देगी ये सेना हिंदुस्तान की ।।

''वन्दे मातरम, वन्दे मातरम, वन्दे मातरम ।
वन्दे मातरम, वन्दे मातरम, वन्दे मातरम'' ।।

चले हड़पने भारत माँ से घाटी ये गलवान की ।
तुमको सबक सिखा देगी ये सेना हिंदुस्तान की ।।

''वन्दे मातरम, वन्दे मातरम, वन्दे मातरम ।
वन्दे मातरम, वन्दे मातरम, वन्दे मातरम'' ।।

वही भाषा जीवित और जागृत रह सकती है जो जनता का ठीक-ठाक प्रतिनिधित्व कर सके और हिंदी इसमे समर्थ हैं।

– पीर मुहम्मद मूनिस

जीवन - प्रश्न

श्री कमलकान्त पाण्डेय
बहुद्देशीय कर्मचारी

स्वर्णिम स्वप्नों की निद्रा में विश्राम करोगे तो,
संघर्ष पथ पर चलेगा कौन ?
प्रेम की बंसी बजाओगे ,तो रण की भेरी' बजाएगा कौन ?
पीयेंगे सब अमृत अमर होने को आतुर
तो विषपान कर नीलकंठ बनेगा कौन ?
स्वर्णिम स्वप्नों की निद्रा में विश्राम करोगे तो,
संघर्ष पथ पर चलेगा कौन ?
धनानन्द बन सब आसक्त रहेंगे,
तो चाणक्य बन चन्द्रगुप्त का निर्माण करेगा कौन ?
मूक बन अन्याय सहन करोगे
तो बागी मंगल पांडे बन कर विद्रोह करेगा कौन ?

प्राणो का मोह सभी करेंगे,
तो मातृभूमि के लिए चन्द्रशेखर आज़ाद बनेगा कौन ?
स्वर्णिम स्वप्नों की निद्रा में विश्राम करोगे तो,
संघर्ष पथ पर चलेगा कौन ?
रस – विलासों का भ्रमर बन कर पान करोगे
तो सूर्य उदित होने पर कमल मुदित' बन खिलेगा कौन ?
अनुराग की रीत सभी करेंगे
मन वैरागी हो रहेगा कौन ?
सुखो का सुख सभी को मिले
तो तापस' का ताप सहेगा कौन ?
करोगे संग्रह सब तुम
तो दान का मान करेगा कौन ?
स्वर्णिम स्वप्नों की निद्रा में विश्राम करोगे,
तो सीमा पर प्रहरी बन जगेगा कौन ?
होगे निराश तुम
तो आस का विश्वास बनेगा कौन ?
स्वर्णिम स्वप्नों की निद्रा में विश्राम करोगे
तो संघर्ष पथ पर चलेगा कौन ?

भेरी– युद्ध के समय बजाए जाने वाला एक प्रकार का वाध

तापस – तप
मुदित – प्रसन्न

भाव

श्री कमलकान्त पाण्डेय
बहुद्देशीय कर्मचारी

क्रोध

हा। हा। मैं, क्रोध
नित्य ही मैं विरोध
मेरे भृकुटी पर रोष
मेरी ज्वाला दावानल से भी विषम
मै क्रोध अग्नि बन कर जलू ,प्रलय का कारक बनू
मेरी साँसो में ज्वलन की ज्वाला
रण लड़ना चाहो आज नष्ट–भ्रष्ट कर दूँ सब काज
हा हा मै क्रोध
मै शिव के तांडव का कारक
ज्वालामुखी के ज्वलन का शासक
भस्म ही मेरा श्रंगार
मै कलह का विजय प्रणेता

अंहकार

मै अंहकार, भर हुंकार
मै मद की मदिरा पीकर मतवाला
मै ही ज्येष्ठ, मै ही श्रेष्ठ
मै पहाड़ो से भी ऊंचा
अभिमान के रथ पर सवार
मै धनुष की टंकार
दंभ की पताका फहराता
मै अहंकार

करुणा

मै करुणा का मानसरोवर,
मेरे तीर स्नेह के हंसा, प्रेम की मोती
प्रणय बंधन का जीवंत उदाहरण
मै आचमन करता पवित्रता का गंगाजल
मै सौम्य शांत वैराग्य का हिमालय
मै निशंक ह्रदय में बहता बन पावन धारा
मै करुणा का मानसरोवर
संगीत के शंख बजे उठे मृदुल मनोहर वाणी से
(मनुष्य के मन के भावों का मानवीकरण करने का प्रयास)

बाल मजदूर

श्री विजय कुमार
बहुद्देशीय कर्मचारी

हुआ सवेरा छटा अंधेरा
चिडियों के चहचहाने का हुआ बेरा'
अभी तक न जागा वो अभागा
जो सूर्य के आगमन से पहले
कभी न जागा
अब वो जागेगा, पैसे के लिए भागेगा
सभी इच्छाओ को त्याग
हो चला वो घर से दूर
कर्मों के पहाड़ से
पैसे बिटोरने' चला एक मजदूर
उठा ली उसने बोरिया' बिस्तर चटाई

अब क्या छूटने को है
ले लिया नमकीन और मिठाई
कुछ अभी भी छूट रहा है
बाल और बल्ला
जिसके लिए सुनी गालियां
आवारा निकम्मा निठठला
अनपढ़ ही तो है
न पटवारी न वो कर्मचारी
जिसके लिए छोड़ा बचपन
उसकी माँ दुखियारी
माँ के आँचल से चला वो दूर
पैसे बिटोरने' चला एक मजदूर
बेरा–बेला/समय
बिटोरने–संग्रह करने/ बटोरने
बोरिया – छोटा बोरा

(बाल मजदूर के मन के भावो को कविता के माध्यम से प्रकट करने का प्रयास)

समस्त भारतीय भाषाओं के लिए यदि कोई एक लिपि आवश्यक हो तो वह देवनागरी ही हो सकती है।

– जस्टिस कृष्णस्वामी अय्यर

रोग-प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने हेतु
होम्योपैथिक दवा के वितरण के दौरान
प्रधान महालेखाकर महोदय एवं उपमहालेखाकार महोदय

हिन्दी पखवाड़ा 2020 का उद्घाटन

अखिल भारतीय सिविल सेवा
प्रतियोगिता के दौरान
कांस्य पदक प्राप्त
करती खिलाड़ी- सरूनी

शहीद पुत्र का पिता

श्री विजय कुमार
बहुद्देशीय कर्मचारी

अचानक फौज की गाड़ी आई,
किसी दुलारे को साथ लाई।
ये तो फूलों से लदी है,
जैसे कोई दुल्हन सजी है।
मगर ये कैसी विपदा आई,
हर तरफ गमगीन छटा छाई।
मायूस तिरंगे में लिपटकर,
मेरे लाल की लाश आई,
आखिरी साँस तक लड़ा शौर्य से।
दुश्मनों का सीना चीर,
मेरा गौरव मान बढ़ाया है।
परंतु निर्ममता ने क्या खेल दिखाया है,

देशहित हेतु रणभूमि से बेटा।
इंच इंच कट कर आया है,
हमेशा आरती की थाल सजाया।
न सोचा कभी चिता भी सजाऊँगा,
जिसे था कंधो पर उठाया।
आज उसकी अर्थी भी उठाऊंगा,
न किया कभी सीने से जुदा।
उसे विदा कैसे कर पाऊँगा,
जीवन भर दिल पर रख पत्थर।
कभी न रोया,
अश्रु के इस सैलाब को आज।
कैसे रोक पाऊँगा,
एक पिता होकर इस कदर हूँ टूटा।
लाल बिन माँ की वेदना,
कल्पना न कर पाऊँगा।
पर ही निसठुर ह्रदय प्रण लेता हूँ,
शहीद हुआ हिन्द के लिए लाल हमारा।
लौट कर न आएगा,
भारत माँ पर आंच न आए।
उसकी रक्षा हेतु, अब लाल हमारा छोटा जाएगा,
(देशहित रणभूमि में शहीद हुए पुत्र के पिता की पीड़ा)

पिटाई पोरोठा

श्री कमलकान्त पाण्डेय
बहुद्देशीय कर्मचारी

पिटाई पोरोठा इस शब्द को पढ़कर घबराइए नहीं मैं किसी मार पीट या हिंसा की बात नही कर रहा हूँ बल्कि एक ऐसे स्वादिष्ट व्यंजन की बात कर रहा हूँ जिसका वर्णन पढ़कर आपके मुंह में पानी आ जाए। चलिये इस स्वादिष्ट व्यंजन से मेरा साक्षात्कार किस प्रकार हुआ उसकी चर्चा करता हूँ द्यइस व्यंजन की अधिक जानकारी के लिए आप को कलकत्ता की यात्रा करनी होगी। यह बात सन् 2009 की है जब मैं टालीगंज ट्राम डिपो से अपने स्कूल की पैदल यात्रा कर रहा था। अपने गंतव्य पथ की ओर जाते हुए आईटीसी संगीत अनुसंधान अकादमी की ओर जाते हुए थप–थप की आवाज सुनाई दी, यह आवाज़ सुनकर मुझे ऐसा प्रतीत हुआ मानो किसी की पिटाई हो रही हो मन में कौतुक और भय का भाव लेकर आगे बढ़ा मुझे यह देखकर खुशी हुई कि किसी व्यक्ति की पिटाई नहीं हो रही थी। चलिये मैंने जो दृश्य देखा उसका वर्णन करता हूँ। एक बड़े तवे पर लगभग 30 सेमी व्यास के आकार के मैदे के पराठे को एक भद्र महिला द्वारा पीटा जा रहा था। तवे का तापमान लगभग 330 डिग्री रहा होगा। इस पिटाई को देखकर मेरे चेहरे पर हल्की सी मुस्कान और किसी महिला ब्रूसली के दिव्य दर्शन का आनंद प्राप्त हो रहा था

जैसे वह अपने हथेली को मजबूत करने का अभ्यास कर रही हो। इसके बाद पराठे को परास्त कर जरासंध की भाँति टुकड़े टुकड़े कर तराजू पर तौल कर लोगो को इच्छानुसार दिया गया। जब पिटाई परोठा को तौल कर लोगो को दिया जा रहा था। तब ऐसा लग रहा था कि मानो कोई जौहरी सोना बेच रहा हो। इसके साथ घुघनी और प्याज के महीन कटे छोटे टुकड़े कर परोसा जा रहा था। इसे देखकर मेरे स्वाद की कलिकाएँ मचल उठी और मेरे पेट की जठराग्नि जाग उठी। इच्छा हुई की पिटाई पोरोठा का लुत्फ उठाया जाए किन्तु स्कूल जाने में केवल दस मिनट बचे थे। मैं मन मसोस कर रह गया फिर मन को मना समझाकर की अगले दिन छुट्टी के दिन रविवार को संकल्प किया की पिटाई–पोरोठा और घुगनी का लुत्फ जरूर उठाऊंगा। तभी आवाज़ आई दीदी पिटाई–पोरोठा आरओ देबे (दीदी पिटाई पोरोठा और देना) यह रही पिटाई–पोरोठा की सम्पूर्ण कहानी आशा करता हूँ आपको यह कहानी पसंद आई होगी। चलते–चलते एक अंतिम विनम्र निवेदन आप को जब भी कलकत्ता (वर्तमान समय में कोलकाता) जाने का अवसर प्राप्त हो तो इस अमृततुल्य व्यंजन का लुत्फ जरूर उठाए।

पोरोठा– बंगाली पराठा

घुघनी– भिगोकर तला हुआ अन्न (चना ,मटर आदि)

हिंदी द्वारा सारे भारत को एक सूत्र
में पिरोया जा सकता है।

– स्वामी दयानंद

चिकित्सा क्षेत्र में भारत का बदलता स्वरूप

श्री गजेंद्र भट्ट
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी (तदर्थ)

करीब 100 वर्ष पूर्व महामारी का दंश झेल चुके भारत को आज वर्तमान में कोरोना जैसी भयावह महामारी के दौर से गुजरना पड़ रहा है। मैं बात कर रहा हूँ वर्ष 1918 की जब मुंबई में फैले एंफ्लुएंजा फ्लू से करीब दो करोड़ लोगो की जान चली गई थी। बम्बई एंफ्लुएंजा के नाम से जाने जानी वाली यह बीमारी बाद में मुम्बई बुखार के नाम से विख्यात हुई थी। फिलहाल मुम्बई बुखार से सबक लेते हुए कोरोना वायरस के प्रति सतर्कता एवं जागरूकता ही हमारे अमूल्य मानव जीवन को बचा सकती है।

आज लगभग 100 वर्ष बाद स्थिति काफी सुधर चुकी है उस समय न तो भारत में अच्छी स्वास्थ्य व्यवस्था थी और न ही उस बीमारी से बचाव के उतने कारगर उपाय, परन्तु वर्तमान दौर में चिकित्सा क्षेत्र में भारत ने काफी सकारात्मक सुधार एवं आयाम स्थापित कर लिए हैं। यह दौर था जब भारत में पाकिस्तान, बांग्लादेश एवं बर्मा (म्यांमार) जैसे देश शामिल थे। उस समय उस बुखार से निपटने के लिए कोई वेक्सीन भी तैयार नहीं हुई थी। मरीजों को प्राथमिक तौर पर आराम पहुंचाने के लिए एंटिबयोटिक्स भी नहीं थे, जांच के लिए प्रयोगशाला भी सीमित थे। ऐसे में कोई भी बीमारी रफ्तार से आकर मरीज को अपने आगोश में समा लेती थी।वरन हम आज की

बात करें तो आज भले ही हमारे देश के पास कोरोना महामारी से निपटने के लिए कोई वेक्सीन अथवा दवा न हो परंतु जांच के पर्याप्त साधन उपलब्ध हैं। एहतियात एवं सावधानी बरतने पर डॉक्टर ने कोरोना के मरीजों को ठीक उपचार देकर घर भी भेजा है। भारत आज वरन कोरोना महामारी से संक्रमित मरीजों की संख्या में भले ही प्रथम पायदान पर हो परन्तु फिर भी यहाँ इस बीमारी से मरने वाले मरीजों की संख्या विश्व के अन्य देशों की तुलना में कम है। कोरोना महामारी का सामना जिस तरह से भारत कर रहा है, दुनिया के कई बड़े देश भारत से सबक ले रहे हैं। डबल्यूएचओ भी भारत के इस दिशा में उठाए गए कदमों की तारीफ कर रहा है। डबल्यूएचओ के कार्यकारी निदेशक डॉ. माइकल रेयान ने कहा है कि भारत ने जिस तरह पूर्व में दो गंभीर बीमारियों चेचक एवं पोलियो से लड़ने में दुनिया को राह दिखाई है ठीक उसी तरह कोरोना महामारी से निपटने में भी भारत वेश्विक जगत के सामने मिसाल पेश करेगा। आजादी के बाद, भारत में महामारियों के फेलने का बड़ा खतरा था और कई बीमारियो ने उसे जकड़ा भी था, मगर देश ने उनका डटकर सामना किया, मुहिम शुरू की एवं उसमे जीत भी दर्ज कि। चेचक, प्लेग, हेजा एवं मलेरिया ऐसे ही कई महामारियों के उदाहरण हैं जिन महामारियों को भारत ने लगभग हरा दिया है।

आज जरूरत है हमे ऐसे ही प्रयासों की जिससे हम इस भयावह स्थिति से निपट पाएँ एवं एक बार पुनः समस्त विश्व के सामने अपने देश का लोहा मनवाएँ। इसके लिए जरूरत है कि हम एक सजग नागरिक का कर्तव्य वहन करते हुए इस वेश्विक महामारी में सरकार द्वारा उठाए जा रहे कदमों एवं प्रयासों का भली–भाति पालन करें एवं अपने आस–पास रहने वाले जरूरत मंद लोगों को इस संकट के समय में हर संभव मदद करने का प्रयास करें। जिससे कि हमारा देश फिर पूर्व कि भाति इस बार भी इस महामारी एवं इसके द्वारा विभिन्न क्षेत्रों पर पड़ने वाले नकारात्मक प्रभावों से बच सके।

हिंदी जैसी सरल भाषा दूसरी नहीं है।

– मौलाना हसरत मोहानी

स्त्री

श्रीमती हिना सलीम
वरिष्ठ लेखापरीक्षा

प्रेम का सागर लिखूँ।

या चेतना का चिंतन लिंखू।।

प्रीति का गागर लिंखू।

या आत्मा का मंथन लिंखू।।

रहेगी तो तू फिर भी अपरिभाषित, चाहे जितना लिंखू।

नदियों सी बहती लिंखू।।

या सागर सी गहरी लिंखू।

झरनो सी झरती लिंखू।।

या प्रकृति का चेहरा लिंखू।

रहेगी तो तू फिर भी अपरिभाषित चाहे जितना लिंखू।।

आत्मतत्व चिंतन लिंखू।

या प्राणेश्वरी लिंखू।।

स्थिर चिंतन योगनी लिंखू।

या संसार बियोगती लिंखू।।

या यतति सर्वात्मा लिंखू।

रहेगी तो तू फिर भी अपरिभाषित, चाहे जितना लिंखू।।

हे। नारी तुझे शतरू शतरू प्रणाम।

हिंदी राष्ट्रीय एकता का प्रतीक है।

– डॉ सम्पूर्णानन्द

गंदगी मुक्त भारत

कु0 शगुन बिष्ट
पुत्री, श्री लक्ष्मण सिंह बिष्ट (स.ले.प.अ.)

गांधी जी ने कहा था कि ''स्वच्छता को अपने आचरण में इस तरह बसा लो कि वो आपकी एक आदत बन जाये। यदि कोई व्यक्ति स्वच्छ नही है तो वह स्वस्थ नहीं रह सकता है।'' वास्तव में स्वच्छता, संस्कृति, सभ्यता एवं राष्ट्र की उत्कृष्टाता का घोतक है।

आज विकास की तेज दौड़ एवं विलासिता पूर्ण जीवन की तलाश में तेजी से होते शहरीकरण के कारण कूड़े का उत्सर्जन तेजी से बढ़ रहा है। उत्सर्जित कूड़े का उचित प्रबंधन भी एक विकट समस्या बनती जा रही हैं, जिसके अभाव में जगह–जगह कूड़े के ढ़ेर अनेकों समस्याओं को जन्म दे रही हैं। जहाँ ये कूड़े के ढेर एक ओर शहरों की सुन्दरता पर धब्बा लगा रहे हैं वहीं दूसरी ओर शहरों की सुन्दरता पर धब्बा लगा रहे है वहीं दूसरी ओर बीमारियों को भी जन्म दे रहे हैं।

अभी हाल ही में, ''अंग्रेजों भारत छोड़ो'' आन्दोलन की वर्षगांठ पर हमारें माननीय प्रधान मंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने ''गंदगी मुक्त भारत'' अभियान 08 अगस्त से 15 अगस्त तक पूरे देश में

मनाये जाने का आह्नन दिया है। उन्होने देश को गंदगी मुक्त बनाने व कूड़े से कंचन बनाने पर ज़ोर दिया है।

हमें बापू के शब्दों को ध्यान में रखते हुए स्वच्छता को अपनी आदत में शुमार कर स्वच्छता का मार्ग अपनाना चाहिए। इससे जहाँ एक ओर हम स्वयं को शारीरिक एवं मानसिक रुप से स्वस्थ रख सकते हैं वहीं दूसरी ओर अपने गाँ, शहर व देश को स्वच्छ रखने में अपना योगदान दे सकते हैं। कूड़े का निस्तारण पुनः उपयोग एवं पुनः चक्रण की प्रकिया के रुप में कर अपने पर्यावरण की भी रक्षा कर सकते हैं।

''हम सब का हो एक सपना

गन्दगी मुक्त हो भारत अपना''

भारतीय भाषाएँ नदियां हैं
और हिंदी महानदी।

– रवीन्द्रनाथ ठाकुर

हलद्वानी

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा)
कौलागढ़, देहरादून–248195
उत्तराखण्ड

लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest